ऋग्वेद

यजुर्वेद

ओ३म्

स्वामी श्रद्धानंद विशेषांक

पवमान

(मासिक)

मूल्यः ₹ 15

वर्ष : 27 मार्गशीर्ष-पौष वि0स0 2072 दिसम्बर 2015 अंक : 12

मुद्रकः सरस्वती प्रेस, देहरादून वजनः 50 ग्राम

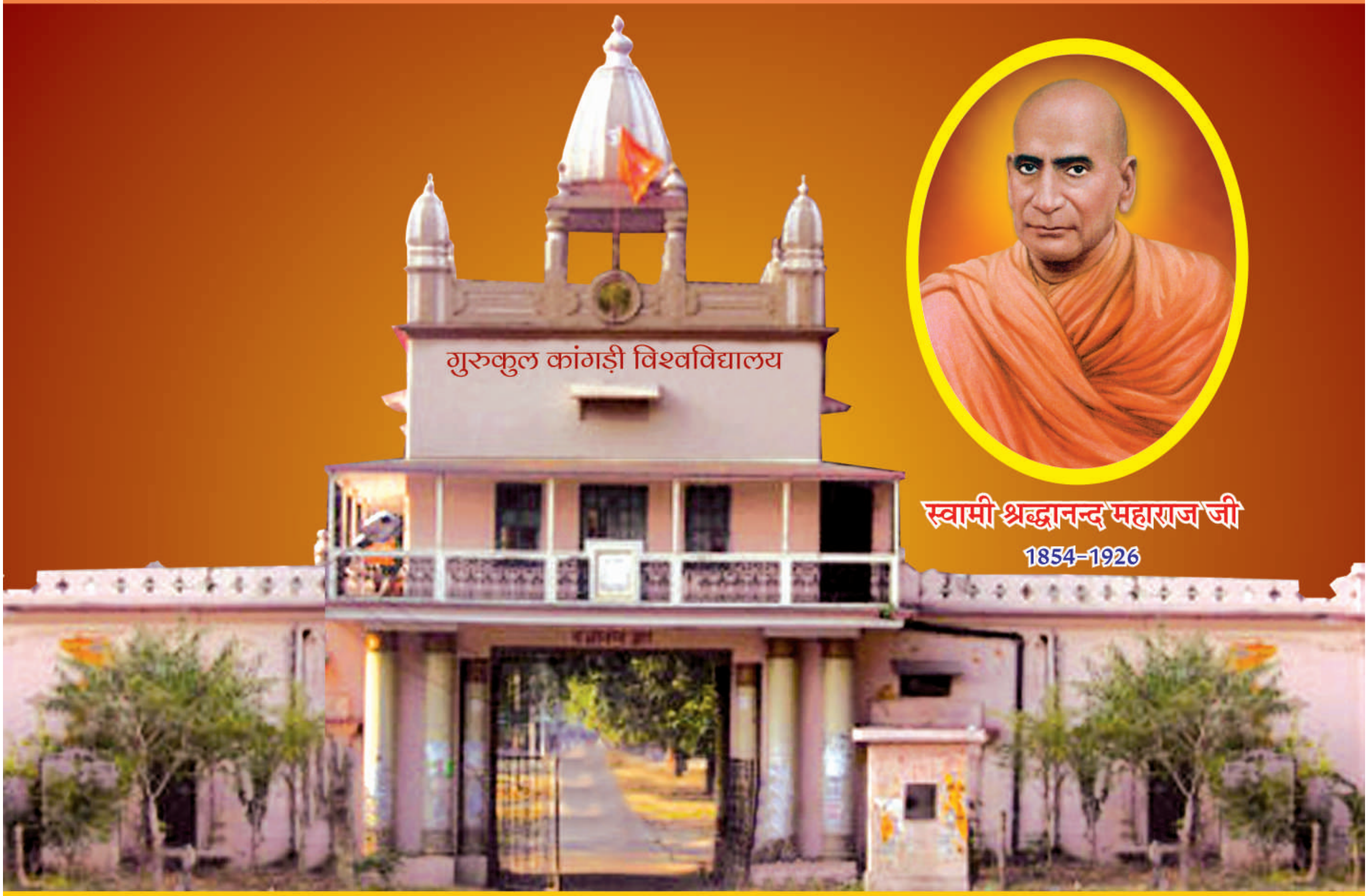

वैदिक साधन आश्रम तपोवन

नालापानी, देहरादून

सामवेद

अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी की संक्षिप्त जीवनी

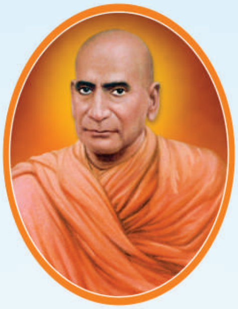

वंश	क्षत्रिय
पिता का नाम	श्री नानक चन्द
जन्म	22 फरवरी सन् 1857 ई.
ग्राम व जिला	तलवन, जालन्धर (पंजाब)
जन्म का नाम	मुन्शीराम (वृहस्पति)
09 वर्ष की आयु में विद्यारम्भ	बनारस 1866
18 वर्ष की आयु में धर्म विरोधी भाव	सन् 1875
22 वर्ष की आयु में ऋषि दयानन्द का सत्संग (बांस बरेली)	सन् 1879
28 वर्ष की आयु में आर्य समाज में प्रवेश	सन् 1885
30 वर्ष की आयु में वकालत परीक्षा पास की	सन् 1887
30 वर्ष की आयु में प्रथम पुत्र हरिशचन्द्र का जन्म	सन् 1887
31 वर्ष की आयु में कांग्रेस से सर्वप्रथम सम्बन्ध	सन् 1889
32 वर्ष की आयु में द्वितीय पुत्र इन्द्र चन्द्र का जन्म	सन् 1889
32 वर्ष की आयु में सद्धर्म प्रचारक का प्रकाशन	13 अप्रैल सन् 1889
34 वर्ष की आयु में धर्मपत्नी का देहान्त	11 अगस्त सन् 1869
35 वर्ष की आयु में प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब	सन् 1892
41 वर्ष की आयु में गुरुकुल खोलने का संकल्प	सन् 1898
45 वर्ष की आयु में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना	2 मार्च सन् 1902
52 वर्ष की आयु में प्रधान भागलपुर हिन्दी साहित्य सम्मेलन	सन् 1909
60 वर्ष की आयु में सन्यास दीक्षा	18 अप्रैल सन् 1917
61 वर्ष की आयु में दुर्भिक्ष पीड़ित सेवा (गढ़वाल)	सन् 1918
61 वर्ष की आयु में राजनीति में सक्रिय भाग	सन् 1918
61 वर्ष की आयु में घण्टाघर चांदनी चौक पर संगीनों के सामने	30 मार्च सन् 1919
61 वर्ष की आयु में जामा मस्जिद में भाषण	04 अप्रैल सन् 1919
62 वर्ष की आयु में अमृतसर कांग्रेस का स्वागताध्यक्ष	सन् 1919
63 वर्ष की आयु में श्रद्धा का प्रकाशन	सन् 1920
65 वर्ष की आयु में असहयोग आन्दोलन में	सन् 1921-22
66 वर्ष की आयु में हिन्दू सभा की स्थापना	सन् 1923
66 वर्ष की आयु में शुद्धि सभा की स्थापना	फरवरी सन् 1923
67 वर्ष की आयु में दक्षिण भारत में	सन् 1924
68 वर्ष की आयु में दयानन्द जन्म शताब्दी नेतृत्व	सन् 1925
69 वर्ष की आयु में लिबरेटर का प्रकाशन	अप्रैल सन् 1926
69 वर्ष की आयु में बलिदान (श्रद्धानन्द बाजार दिल्ली)	23 दिसम्बर सन् 1926

ओ३म्

पवमान

वर्ष—27 अंक—12

मार्गशीर्ष—पौष 2072 विक्रमी दिसम्बर 2015

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,116 दयानन्दाब्द : 192

★

—: संरक्षक :—

स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती

★

—: अध्यक्ष :—

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

—: सचिव :—

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

—: आद्य सम्पादक :—

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

—: मुख्य सम्पादक :—

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 08755696028

★

—: सम्पादक मण्डल :—

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

—: कार्यालय :—

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून—248008

दूरभाष : 0135—2787001

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती	3
वेदों में गो—वध नहीं	शिवदेव आर्य	4
स्वामी श्रद्धानन्द का योगदान	पं० उम्मेद सिह विशारद	5
दलितोद्धार और स्वामी श्रद्धानन्द	कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	7
महान आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द	**मनमोहन कुमार आर्य**	10
शहीद स्वामी श्रद्धानन्दजी	स्वामी ओमानन्द सरस्वती	13
मेरे ज्योतिस्तम्भ	श्री सन्तराम बी.ए.	15
शुद्धि आन्दोलन और अस्पृश्यता निवारण	**स्वामी श्रद्धानन्द**	18
गुरुकुल के वे स्मरणीय दिन	**पं० देशबन्धु विद्यालंकार**	21
अनिद्रा : कारण व उपचार	**डॉ० के०सी० ठुकराल**	24
दानदाताओं की सूची		26
वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर (प्रथम स्तर)		27
वार्षिक सदस्यों की सूची		28
आजीवन सदस्यों की सूची		31

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	कैनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000 / — प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाईट फुल पेज — रु. 2000 / — प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाईट हॉफ पेज — रु. 1000 / — प्रति माह

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

धैर्य का गुण

धीरता, सहिष्णुता, स्थिरता का भाव और सहनशीलता धृति या धैर्य है। विषम परिस्थितियां उत्पन्न हो जाने पर भी मन में चिन्ता, शोक और उदासी उत्पन्न न होने देने का गुण घैर्य है। धैर्य मनुष्य को ऊंचा उठाने का एक उत्तम गुण है। धैर्यवान् व्यक्ति विपत्ति आने पर भी अपना मानसिक सन्तुलन बनाए रखता है और शान्तचित्त से इस पर नियंत्रण का सरल मार्ग खोज लेता है। सुख दुःख, जय पराजय, हानि लाभ, गर्मी सर्दी आदि अनेक ऐसे द्वन्द्व हैं जो जीवन में अनुकूलता या प्रतिकूलता का अनुभव कराते रहते हैं। द्वन्द्वों पर विजय पाने के लिए किया गया पुरुषार्थ एक प्रकार का तप है। इन द्वन्द्वों पर विजय पाने के बाद व्यक्ति धीर पुरुष बन जाता है। इस गुण के कारण वह सुख के समय प्रसन्नता से गदगद नहीं होता और न दुःख में हताश होकर बैठता है बल्कि हर एक अवस्था में समान रूप से कार्यशील बना रहता है। धैर्य के गुण को प्राप्त करके मनुष्य में असाधारण सामर्थ्य आ जाती है। वह न केवल अपने लक्ष्यों को अविचल रूप से प्राप्त करता जाता है, बल्कि दूसरों को उचित सलाह देने के लिए भी सदा तत्पर रहता है। मनुष्य के इस गुण को गीता में दैवीय सम्पदा बताया गया है। इस गुण के अभाव में मनुष्य धार्मिक कार्य करने में लज्जा का अनुभव करेगा और अधार्मिक कामों या कुकर्मों को करने में डरेगा नहीं। ऐसे में समाज में आसुरी प्रवृत्ति बढ़ती जायेगी। समाज में मानवीय मूल्यों की रक्षा के लिए हमें धैर्यशाली बनना चाहिए। जीवन के मार्ग पर मनुष्य को अनेक संघर्ष करने पड़ते हैं परन्तु इनका सामना धीरज रख कर ही किया जा सकता है। सामान्य परिस्थितियों में तो जीवन यथावत् चलता रहता है परन्तु घैर्य की परीक्षा विपत्ति आने पर ही होती है। भर्तृहरि का कहना है कि चाहे नीति निपुण व्यक्ति हमारी निन्दा करें और चाहे स्तुति करें, लक्ष्मी अर्थात् धन सम्पत्ति चाहे रहे न रहे, आज ही मरना हो चाहे एक युग के पश्चात् मरना हो, घीर पुरुष न्याय के रास्ते से विचलित नहीं होते हैं। ऐसे ही धैर्य की आवश्यकता तब महसूस की गई थी, जब सन् 1909 में पटियाला के आर्यसमाजियों के घरों पर पुलिस ने छापा मारा और उनके घर से कई कागजात व पुस्तकें आदि जब्त कर कई लोगों को गिरफ्तार कर, उन पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया था। अन्य कई स्थानों पर भी आर्यसमाज के विरुद्ध कार्यवाही की गई थी और लाला लाजपतराय को कैद कर माण्डले जेल भेज दिया गया था। उस संकट की घड़ी में धैर्य धारण करते हुए अपने पक्ष को उचित रूप से अंग्रेज सरकार के समक्ष रखने की आवश्यकता थी। उस समय महात्मा मुंशीराम ने न केवल स्वयं धैर्य धारण किया अपितु आर्यसमाज के सभी सदस्यों को भी धैर्य धारण करने के लिए प्रेरित किया। उनके प्रयासों के फलस्वरूप आर्यसमाज के प्रति सरकार के दृष्टिकोण में परिवर्तन हुआ। न्याय के पथ पर अडिग रहने वाले इस धीर पुरुष को दिनांक 23 दिसम्बर को उनके 90वें बलिदान दिवस पर श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए, हम यह विशेषांक समर्पित कर रहे हैं।

कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

❁ वेदामृत ❁

हे तेजरूप! आप हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करें

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्
ऋषिः विश्वमित्र ।। देवता— सविता।। छन्दः— गायत्री
(ऋक् 6 | 28 | 3; अथर्व० 4 | 21 | 3)

ऋषिः भरदाजो बार्हस्पत्यः।। देवता— गावः।। छन्दः— जगती।।

विनय— मुझे क्या करना चाहिए क्या नहीं— यह मैं नहीं जानता। किस समय क्या कर्त्तव्य है क्या अकर्त्तव्य, क्या धर्म है क्या अधर्म— यह मैं नहीं जान पाता। सुना है कि बड़े—बड़े ज्ञानी भी बहुत बार इस तरह किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं, परनतु क्या इसका कोई इलाज नहीं है? हे सवितः देव! हमारे उत्पादक देव! क्या तूने हमें उत्पन्न करके इस अँधेरे संसार में यूँ ही छोड़ दिया है? कोई निर्भ्रांत (निश्चित) प्रकाश हमारे लिए तुमने नहीं दिया है— यह कैसे हो सकता है, नहीं, तुम अपने अनन्त प्रकाश के साथ सदा हमारे हो। यदि हम चाहें और यत्न करें तो तुम हमें अपने प्रकाश से आप्लावित कर सकते हो। इसके लिए हम आज से ही यत्न करेंगे और तेरे उस 'भर्ग' (विशुद्ध तेज) को अपने में धारण करने लगेंगे जो वरणीय है, जिसे हर किसी को लेना चाहिए— जिसे प्रत्येक मनुष्य—जन्म पानेवाले को अपने अन्दर स्वीकार करने की आवश्यकता है। इस तेरे वरणीय शुद्धस्वरूप का हम जितना श्रवण, मनन, निदिध्यासन करेंगे, अर्थात् जितना तेरा कीर्तन सुनेंगे, तेरा विचार करेंगे, तुझमें मन एकाग्र करेंगे, तेरा जप करेंगे, तुझमें अपना प्रेम समर्पित करेंगे उतना ही तेरा शुद्धस्वरूप हमारे अन्दर धारण होता जाएगा। बस, यह ऊपर से आता हुआ तुम्हारा तेज ही हमारी बुद्धि को और फिर हमारे कर्मों को ठीक दिशा में प्रेरित करता रहेगा। इस शुद्धस्वरूप के साथ तुम ही मेरे हृदय में बस जाओगे और तुम ही मेरी बुद्धि, मन आदि —सहित इस शरीर के संचालक हो जाओगे। फिर धर्म—अधर्म की उलझन कहाँ रहेगी। तुम्हारे पवित्र संस्पर्श से इस शरीर की एक—एक चेष्टा में शुद्ध धर्म की ही वर्षा होगी। इसलिए हे प्रभो! हम आज से सदा तुम्हारे शुद्ध तेज को अपने में धारण करने में लगते हैं। एक—एक मानसिक विचार के साथ, एक—एक जप के साथ इस तेज का अपने अन्दर आह्वान करेंगे और इस तरह प्रतिदिन इस तेज को अपने में अधिकाधिक एकत्र करते जाएँगे। निश्चय है कि इस 'भर्ग' की प्राप्ति के साथ—साथ धर्म के निश्चय में पटू होती हुई हमारी बुद्धि एक दिन तुम्हारी सर्वज्ञता के कारण पूर्ण रूप से ठीक मार्ग पर चलने वाली हो जाएगी।

शब्दार्थ— सवितुः प्रेरक, उत्पादक देवस्य— परमात्मदेव के तत— उस वरेण्यम्— वरने योग्य भर्गः— शुद्ध तेज को धीमहि— हम धारण करते हैं, ध्यान करते हैं यः जो धारण किया हुआ तेज नः — हमारी धियः बुद्धियों को, कर्मों को प्रचोदयात्— सदा सन्मार्ग पर प्रेरित करता रहे।

वेदों में गो-वध व मांसाहार का कहीं भी नामोनिशान तक नहीं है

–शिवदेव आर्य, गुरुकुल पौंधा देहरादून

जहां हमारी संस्कृति में गाय को माता का उच्च स्थान दिया गया है, वहीं प्रायः कुछ लोग बिना कुछ सोचे समझे कहते हैं कि वेदों में गो–वध तथा गो–मांस खाने का विधान है। क्षणिक स्वार्थ व लाभ के लिए लोग वेद व गोमाता का नाम कलंकित करने का प्रयास कर रहे हैं। उनसे अनुरोध है कि कृपया इन मन्त्रों के अर्थ पर विचार करें–

प्रजावतीः सुयवसे रुशन्तीः शुध्द अपः सुप्रपाणे पिबन्तीः।
मा वस्तेन ईशत माघशंसः परि वो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु।।
(अथर्व.–7.75.1)

इस मन्त्र का देवता 'अघ्न्या' है। जो कि वैदिक कोष के अनुसार गाय का मुख्य नाम है। इसका निर्वचन है– न हन्तव्या भवति अर्थात् गाय इतना अधिक उपकारी पशु है कि इस का वध करना पाप ही नहीं अपितु महापाप है।

इस मन्त्र का अर्थ इस प्रकार होगा कि– हे मनुष्यों! तुम्हारे घरों में प्रजावतीः उत्तम सन्तान वाली, जौ के खेतों मे चरने वाली और शुध्द जलों को पीने वाली गौ हो और इसकी सुरक्षा ऐसी हो कि कोई चोर उन्हें चुरा न सके और पापी डाकू आदि गाय को अपने वश मे न कर सके। रुद्र परमात्मा की वज्रशक्ति तुम्हारे चारों तरफ सदा विद्यमान रहे।

अथर्ववेद के ही एक अन्य मंत्र में कहा गया है–

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामः।।
(अथर्व.–1.16.4)

अर्थात् राजन! यदि कोई मनुष्य हमारी गाय, अश्व आदि पशुओं को मारता है, उस हत्यारे को कारागार या कठोर दण्ड देकर हमारी रक्षा करो।

दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽन..........जायताम्।(यजु.–22.22)

इस मन्त्र में राष्ट्रिय प्रार्थना है– हमारे देश में प्रचुर दूध देने वाली गोएँ, भार ढोने में समर्थ तथा कृषि के योग्य बैल और रथों के लिये सक्षम और शीघ्रगामी घोड़े पैदा हों।

इमं मा हिंसीर्द्विपादं पशुं सहस्त्राक्षो मेधाय चीयमानः।
मयुं पशुं मेधमग्ने जुषस्व तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद।
मयुं ते शुगृच्छतु यं द्विष्मस्तं ते शुगृच्छतु।।
(यजु.–13.47)

इस मन्त्र के द्वारा परमपिता परमेश्वर मनुष्य को आदेश देता है कि सबके उपकार करने हारे गवादि पशुओं को कभी न मारें, किन्तु इनकी अच्छी प्रकार से रक्षा करें और इनसे उपकार लेके सब मनुष्यों को आनन्द देवे।

यजुर्वेद के मंत्र 30.18 में कहा गया है कि जो समाज को चलाने वाले राजादि लोग हैं, वे तभी सामर्थ्यशील हैं, जो गाय आदि पशुओं को मारने, काटने वाले मनुष्यों को कठोर से कठोर सजा देते हों।

यजुर्वेद में कहा है– गोस्तु मात्रा न विद्यते।।
(यजु.–23.48)

अर्थात् गाय इतना अधिक महत्त्वपूर्ण पशु है जिसकी तुलना करना सम्भव ही नहीं है। गाय का दूध अमृत होता है और इसका मूत्र व गोबर भी रोग निवारक और सर्वोत्तम खाद है। कृषि प्रधान भारत के लिए तो इसका महत्त्व अत्यधिक हो जाता है। इसलिए दयार्द्र दयानन्द की दया 'गोकरुणा–निधि' में भी उजागर होती है। गायों की नृशंस हत्या को देखकर ऋषि दयानन्द के जीवन में कई प्रसंग ऐसे आते हैं जिन अवसरों पर ऋषि दयानन्द के अश्रु बहते हुए देखे गये थे। संसार के राजा, महाराजाओं से विनती करने के बाद परमेश्वर से भी उन्होंने प्रार्थना की थी, ' हे महाराजाधिराज जगदीश्वर! जो इनको कोई न बचावे तो आप उनकी रक्षा करने और हम से कराने में शीघ्र उद्यत हूजिए।'

गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को स्वामी श्रद्धानन्द का योगदान

–पं० उम्मेद सिह विशारद

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म जालन्धर जिले के तलवन ग्राम में सन् 1857 ई० में हुआ था। इनके पिता लाला नानकचन्द जी उत्तरप्रदेश में पुलिस के बड़े अफसर थे। वे बनारस, बरेली आदि कई बड़े शहरों में पुलिस कोतवाल के पद पर रह चुके थे। वे नौकरी से निवृत्त होकर अपने गांव में आकर रहने लगे थे।

महात्मा जी का सर्वदा यही विचार रहा कि यथा सम्भव पुरानी रुढ़ियों और आडंबरों को तोड़ा जाये। इसी के कारण वह ऐसी शिक्षाप्रणाली चाहते थे, जिस शिक्षा में शिक्षित हुए भारत के नव युवक पुराने रूढ़ि रिवाजों से अलग होकर वैदिक शिक्षा–प्रणाली के अनुसार शिक्षित हों। इन विचारों की और भी अधिक पुष्टि तब हुई, जब उन्होंने बरेली में महर्षि स्वामी दयानन्द के व्याख्यान सुने और उनसे ईश्वर धर्म आदि के सम्बन्ध में जानकर इनके विचार परिवर्तित हुए। इससे उनके जीवन में महान् क्रांति हुई। उन्होने सत्यार्थप्रकाश पढ़ा और उसमें बताई हुई गुरूकुलीय शिक्षाप्रणाली से प्रभावित होकर देश के विद्यार्थियों के लिए इसकी आवश्यकता समझी। उनको इस विचार ने प्रेरित किया कि जब तक भारतीय विद्यार्थी नवीन अंग्रेजी शिक्षा–प्रणाली को छोड़कर पुरानी वैदिक आर्ष–प्रणाली के पठन–पाठन का अभ्यास नहीं करेंगे तब तक भारतीय युवकों में जागृति नहीं आ सकती है। इतिहास का अध्ययन करते हुए उन्होंने भारत की पराधीनता का कारण जान लिया कि भारतीय युवकों को अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा ऐसा बनाया जा रहा है जिससे भारतीय युवक देखने में तो भारतीय हो परन्तु अन्दर से आचार व्यवहार और विचारों में पूरे अंग्रेज हों। अंग्रेजी शिक्षा मैकाले की शिक्षापद्धति का परिणाम है। उसे जड़ से बदलने की आवश्यकता महात्मा जी ने अनुभव की। अंग्रेजी शिक्षा के परिणाम से नवयुवकों में मद्य–मांस का प्रचार हो रहा था। सिगरेट और बीड़ी का व्यसन लोगों में घुस गया था। अफीम, भांग, चरस आदि मादक द्रव्यों में नवयुवक फंसते जा रहे थे। शिक्षित लोग मिथ्याभिमान के कारण अशिक्षितों से घृणा और भेदभाव सीख चुके थे। युवकों में अशिष्टता, असभ्यता और दुराचार आदि के रूप में अंग्रेजी शिक्षा ने युवकों के ह्दयों को काबू कर लिया था। संयम और सदाचार के गुण असम्भव समझे जाने लगे थे। कलियुग में ब्रह्मचर्य जैसा कोई आश्रम भी हो सकता है, इस पर से लोगों का विश्वास हट गया था। इस प्रकार महात्मा जी ने यह आवश्यक समझा कि सदाचार का प्रचार करने के लिए 'सद्धर्म प्रचारक' अखबार निकाला जाये, और गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के लिए एक संस्था स्थापित की जाए।

''सद्धर्म प्रचारक'' अखबार उर्दू भाषा में प्रकाशित होता था। परन्तु आर्ष शिक्षा प्रणाली के लिए गुरुकुल की स्थापना हुई। उसके कुछ ही वर्ष पश्चात् ''सद्धर्म प्रचारक'' शुद्ध हिन्दी भाषा में और देव नागरी लिपि में कर दिया गया। धार्मिक विचारों के प्रचार के लिए सम्पादकीय मुख्य लेख महात्मा जी का अपना होता था और साथ ही भारतीय जनता में

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध में प्रेरणात्मक अनेक लेख होते थे।

महात्मा जी ने अपने दृढ़ संकल्प के अनुसार महान् कार्य करने के लिए अपनी वकालत छोड़ दी और कांगड़ी ग्राम की भूमि दान में प्राप्त होने पर गंगा के तट पर निर्जन वन में 1902 में गुरुकुल की स्थापना की। एक बार एक कट्टर पौराणिक गुरुकुल देखने के लिये आया। उसे यह जानकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि चारों वर्णों के बालक एक ही पंक्ति में, एक ही आसन पर बैठकर भोजन करते हैं। उसे यह अच्छा नही लगा। महात्मा जी ने कहा हमें तो कोई भेद नहीं दीखता है। अभी तो ये शिक्षा ग्रहण करने वाले बालक हैं। शिक्षा ग्रहण करके आगे जैसे ये अपने कर्म दिखलायेंगे, वैसे सबके सामने आजायेंगे। अच्छा मैं बालकों को एक पंक्ति में खड़ा कर देता हूँ। आप बालकों में से बता दीजिये कौन ब्राह्मण है कौन शुद्र है? पंडित जी ने जो जन्मना शूद्र बालक थे उनको तो ब्राह्मण बतला दिया और जो ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए थे उन्हें शूद्र बता दिया। सब लोग हंस पड़े। महात्मा जी ने कहा कि जिन को आपने शूद्र बताया है वे तो ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुए हैं और जिन्हें ब्राह्मण बतलाया है वे शूद्र कुल में उत्पन्न हुए हैं। पण्डित जी बड़े लज्जित हुए। सचमुच बाहर के रंगरूप से कोई वर्ण नियत नहीं होता। प्रत्युत, गुण कर्म से वर्ण नियत होता है। इस प्रकार देश में प्रचलित रूढ़िवाद पर गुरुकुल शिक्षाप्रणाली ने बड़ा भारी आघात किया है और भारतीय बालकों में इस प्रकार के नवजीवन का संचार किया है कि वे विद्या, बुद्धि और पुरुषार्थ के द्वारा जीवन में आगे बढ़ सकते है। जब कि इससे पूर्व उनको आगे बढने का मार्ग नहीं मिलता था। इस प्रकार गुरुकुल शिक्षाप्रणाली ने भारतीय जीवन में क्रान्ति पैदा कर दी है।

महात्मा जी ने गुरुकुल शिक्षाप्रणाली स्थापित करके ब्रह्मचर्य के नियमों को मुख्यरूप से अभ्यास कराने का प्रयत्न किया। प्राचीन गुरुकुल में तो ब्रह्मचारी नंगे सिर रहते थे। छाता, जूता आदि कभी धारण नहीं करते थें। चाहे गर्मी हो, सर्दी हो वा वर्षा हो। तपस्यामय जीवन था। कोई रोगी हो जाता तो उसकी सेवा करने के लिए ब्रह्मचारी हर समय उद्यत होते थे। सब का आपस में प्रेममय सम्बन्ध था। इन सबके पीछे एक ही बात विशेषतः काम करती थी कि महात्मा जी प्रतिदिन ब्रह्मचारियों को सन्मार्ग पर चलने का उपदेश देते रहते थे। महात्मा जी ने 1917 के गुरूकुलोत्सव से कुछ दिन पूर्व संन्यास ग्रहण करने का निश्यच कर लिया और 18 अप्रैल 1917 के दिन संन्यास ग्रहण कर लिया। बड़ी प्रसन्नता का वह दिन था जब उन्होंने संन्यास ग्रहण किया और अपने जीवन का कार्य बहुत अधिक विस्तृत कर दिया।

इस कर्मक्षेत्र में अब वह आदर्श कर्मयोगी नेता के रूप में भारत के सामने उपस्थित हुए। उन्होंने लिखा है कि संसार के नेताओं को चााहिए कि मन वचन और कर्म द्वारा अपने आदर्श से जनसमुदाय का जीवन सुधारें। यदि नेताओं का जीवन अपने उदाहरण से दूसरों के मन, वचन और कर्म का पालन नहीं करवा सकता हो तो अपने किये हुए कर्मों के प्रायश्चित्त लिए उसे एकान्त में बैठ जाना चाहिये। अछूतोद्धार, शुद्धि आन्दोलन, राष्ट्रप्रेम के लिए उन्होंने अपना जीवन अर्पित किया। भारत में गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने में उनका योगदान अविस्मरणीय है। इन समस्त कार्यों के लिए स्वामी श्रद्धानन्द को सदैव आदर के साथ स्मरण किया जायेगा।

दलितोद्धार में स्वामी श्रद्धानन्द की भूमिका

—कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

स्वामी श्रद्धानन्द का विचार था कि हिन्दुओं में प्रचलित अस्पृश्यता का अभिशाप उनके सम्मान पर एक बट्टा था और इस पाप का दुष्परिणाम सम्पूर्ण राष्ट्र भुगत रहा था। जब कभी राजनैतिक नेता स्वराज्य की मांग रखते थे तो उनके सामने उनके पापों को रख कर उनका मुंह बंद कर दिया जाता था कि जो लोग अपने ही समाज के एक तिहाई लोगों को गुलाम बनाये हुए हों और उनको पैरों तले कुचल रहे हों, उन्हें विदेशियों द्वारा किये गये अत्याचारों के विरुद्ध शिकायत करने का कोई अधिकार नहीं था। कांग्रेस के सम्पर्क में आये तो उन्हें यह जानकर पीड़ा हुई कि अस्पृश्यता निवारण और दलितोद्धार की ओर कांग्रेस का कोई रुझान नहीं था। स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने एक लेख में लिखा है कि वे कांग्रेस के कलकत्ता सम्मेलन में केवल इसलिए सम्मिलित हुए थे कि उन्होंने राष्ट्रीय असेम्बली से यह प्रार्थना की थी कि कांग्रेसी प्रोग्रामों की सूची में अछूतोद्धार के कार्यक्रम को सम्मिलित किया जाय परन्तु दुर्भाग्य से उस प्रस्ताव पर विषय–समिति तक में विचार करने की आवश्यकता नहीं समझी गई थी। नागपुर के कांग्रेस अधिवेशन से पूर्व महात्मा गांधी मद्रास गये थे। वहां दलित जाति के लोगों ने अपनी स्थिति के सम्बन्ध में इस प्रकार के प्रश्न गांधी जी से किये कि वे हकला गये और उसके बाद स्वराज्य प्राप्ति के लिए यह भी शर्त लगा दी कि 12 मास के अन्दर–अन्दर अस्पृश्यता दूर की जानी चाहिए। अगस्त 1921 में स्वामी जी दिल्ली पहुँचे तो उन्होंने देखा कि अस्पृश्यता निवारण का प्रश्न दिन–प्रतिदिन जटिल होता जा रहा था। दिल्ली और उसके आसपास के आर्यसमाज के लोग लगभग 6 वर्षों से दलितों के जीवन में विकास लाने का प्रयास कर रहे थे। जब समाज के इस वर्ग को चन्दा देकर कांग्रेस की सदस्यता लेने के लिए कहा तो वे तैयार नहीं हुए। उनका कहना था कि वे सदियों से तिरस्कार की पीड़ा भोग रहे थे और उसके समाधान के लिए उन्हें ठहरने के लिए कहा जा रहा था। कांग्रेसी चाहते थे कि स्वराज्य की उन्हें शीघ्रता से प्राप्ति हो जाए। अछूतों की दशा को देखते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने दिल्ली के हिन्दुओं को प्रेरणा दी कि वे अछूत जाति के लोगों को अपने कुएँ से पानी लेने की अनुमति दें, परन्तु मुस्लिम सम्प्रदाय के कांग्रेसी उनके कार्य में बाधक बने और स्वामी जी को यह आभास हुआ कि नौकरशाही की दुरभिसन्धियों से अछूत वर्ग को मुक्त कराना आर्यसमाजियों के लिए सम्भव नहीं होगा। संकट की इन परिस्थितियों को देखते हुए स्वामी श्रद्धानन्द ने 9 सितम्बर 1921 को महात्मा गांधी को एक पत्र लिखा जिसमें कहा गया था कि दिल्ली पहुँचने पर स्वामी जी ने यह महसूस किया था कि कांग्रेस के माध्यम से दलित जातियों का उत्थान करना कठिन था। दिल्ली और आगरा के चमार केवल इतना ही चाहते थे कि हिन्दू और मुसलमान दोनों के द्वारा प्रयुक्त कुओं से उन्हें भी पानी भरने दिया जाय। कांग्रेस के लिए केवल इतना करना भी कठिन प्रतीत हो रहा था। एक मुसलमान व्यापारी ने तो यहाँ तक कहा कि चाहे हिन्दू इन लोगों को अपने कुओं से पानी भरने दें, मुसलमान उन्हें ऐसा करने से जबरदस्ती रोकेंगे क्योंकि ये लोग मुर्दा जानवरों का मांस खाते हैं। स्वामी जी का इस पर कहना था कि वे हजारों ऐसे चमारों को जानते थे जो न शराब पीते थे और न किसी तरह का मांस खाते थे। जो मांस खाते थे, उनकी इस गन्दी आदत को आर्यसमाजियों ने छुड़ाया था। स्वामी श्रद्धानन्द

ने यह प्रश्न उठाया कि क्या मांसभक्षी हिन्दू और मुसलमान जीते प्राणियों का मांस नोच कर या निगल कर खाते हैं? क्या वे इन जीवों का मांस उनके मरने के बाद नहीं खाते थे? महात्मा गांधी को इस पत्र में याद दिलाया गया था कि नागपुर में उन्होंने कहा था कि 12 मास के भीतर स्वराज्य–प्राप्ति की एक शर्त दलित जातियों को उनके अधिकार दिलाने की होगी तथा उनकी उन्नति सम्पादित करने से पूर्व ही महात्मा गांधी ने यह घोषणा कर दी थी कि यदि 30 सितम्बर तक विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार को पूरा कर लिया जाता है तो एक अक्टूबर को स्वराज्य प्राप्त हो जाएगा। स्वदेशी वस्त्रों का उपयोग तथा उसका प्रचार अत्यन्त आवश्यक था परन्तु जब तक हमारे साढ़े छह करोड़ दलित लोग ब्रिटिश नौकरशाही की शरण लेते रहेंगे तब तक स्वदेशी का विस्तार भी असम्भव ही होगा। स्वामी श्रद्धानन्द ने पत्र के अन्तिम भाग में कांग्रेस की नीतियों से दुःखी होते हुए कहा था कि वे अपनी सीमित शक्ति से दलित जातियों के उत्थान के कार्य में लगना चाहते थे। वे नहीं समझते थे कि उन तथा कथित अछूत भाइयों के सहयोग के बिना जो स्वराज्य उन्हें मिलेगा, वह भारत राष्ट्र के लिए किसी भी प्रकार से हितकारी होगा। उन्होंने कहा कि वे यह पत्र केवल यह सूचित करने के लिए लिख रहे थे कि अब वे कांग्रेस कार्यकारिणी को आर्थिक सहयोग के लिए नहीं लिखेंगे। अपने सीमित साधनों से ही जो कुछ बन पड़ेगा, वे करेंगे। इस पत्र में दलितों की समस्या के अतिरिक्ति अन्य कई बिन्दुओं पर गांधी जी और कांग्रेस के विचारों से असहमति प्रकट की गई थी। गांधी जी को इस पत्र के द्वारा स्पष्ट रूप से अवगत कराया गया था कि साढ़े छह करोड़ अछूत उनसे पृथक् हो गये थे।

स्वामी श्रद्धानन्द ने 30 जून, 1922 को महामन्त्री अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी को एक पत्र लिखा था। इसमें लिखा गया था कि महात्मा गांधी अस्पृश्यता के प्रश्न को सबसे आगे रखते थे। अब श्रद्धानन्द ने यह अनुभव किया था कि दलित वर्गों की स्थिति को सुधारने का कार्य एक अंधंरे कोने में डाल दिया गया था। कांग्रेस ने उनके द्वारा पूर्व में दिये गये सुझावों पर उचित निर्णय न लेते हुए एक उपसमिति के गठन की घोषणा की थी जिससे स्वामी श्रद्धानन्द ने असहमत होने के कारण त्यागपत्र दे दिया था।

जाति प्रथा के विरुद्ध संघर्ष करने में वे अग्रणीय रहे। जातपांत–तोड़क–मण्डल के संस्थापकों में से एक मुख्य कार्यकर्ता श्री सन्तराम बी0ए0 ने अपने संस्मरण में लिखा है– ''कुछ मित्रों के साथ मिलकर मैंने सन् 1922 में लाहौर में जातपांत–तोड़क–मण्डल स्थापित किया था। हमें चारों ओर से हतोत्साहित किया जाता था। मुझे पूरी तरह से स्मरण है कि स्थानीय आर्य नेताओं के निष्क्रिय प्रतिरोध के कारण एक वर्ष हमें अपने वार्षिक सम्मेलन के लिए कोई प्रधान मिलना कठिन हो गया था। स्वामी श्रद्धानन्द उस वर्ष लाहौर आर्यसमाज से कुछ अप्रसन्न थे। उन्होंने उसके वार्षिकोत्सव में आने से इन्कार कर दिया। पर जातपांत तोड़क मण्डल की प्रार्थना पर उन्होने हमारा प्रधान बनना स्वीकार करके हमारी मान–रक्षा की थी। सभापति के आसन पर बोलते हुए उन्होंने कहा था–'मुझे पता नहीं था कि आर्यसमाजी लोग जातपांत तोड़ने से इतना भयभीत हैं। आज इस प्लेटफार्म पर एक भी आर्य नेता को न देख मुझे दुःख हो रहा है। मुझे ऐसा पता होता तो मैं गुरुकुल न बनाकर जातपांत तोड़क मण्डल ही बनाता।' उनकी इस अमर वाणी से मण्डल के कार्यकर्ताओं को बड़ा भारी उत्साह मिला था। वे सदा हमारे लिए प्रकाश–स्तम्भ बने रहे। जातपांत तोड़ने के आन्दोलन की कठिनाइयों को देखकर जब भी मेरा उत्साह भंग होने लगता था, उस ज्योति–स्तम्भ से मैं नवजीवन पाने लगता था। उन्होंने उस घोर अन्धकार के समय में जब पंजाब में परदा प्रथा तक को दूर करना कठिन था, अपनी बेटी और बेटों का विवाह जाति भेद को तोड़कर करते हुए आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया था।''

स्वामी जी दलितोद्धार, शुद्धि, गुरुकुलीय शिक्षा आदि कार्यों में सदैव तत्पर रहे। 'हरिजन' के समान अस्पृश्य कहलाने वाले लोगों के लिए दलित शब्द का प्रयोग करने वालों में वह अग्रणी थे। वे दलितोद्धार के कार्य में इस वर्ग के लोगों के साथ खान–पान आदि का सब व्यवहार सर्वथा खोल देने के पक्ष में थे। उनका विचार था कि अस्पृश्यता के कलंक को हिन्दू समाज के माथे से मिटाना समस्त हिन्दुओं का कर्तव्य है। वे समय–समय पर अपने व्याख्यानों और पत्रिकाओं के माध्यम से दलितोद्धार करने और अस्पृश्यता को जड़ से मिटाने की अपील करते रहते थे। इस अभियान को सफल बनाने के लिए उन्होंने सन् 1913 में दिल्ली में दलितोद्धार–सभा का गठन किया था। स्वामी जी को सन् 1921 में इस सभा का अध्यक्ष बनाया गया था। दिल्ली और आसपास के नगरों में उनके नेतृत्व में हजारों दलितों का उद्धार किया गया था। हिन्दू धर्म छोड़कर अन्य धर्मों में प्रवेश करने से रोकने के अतिरिक्त उनके द्वारा अपने शुद्धि कार्यक्रम में बड़ी भारी संख्या में अन्य धर्मों में प्रविष्ट हुए लोगों को शुद्ध कर वैदिक धर्म की दीक्षा देकर शुद्ध किया गया था। यही नहीं, उनकी जीवन पद्धति में सुधार लाया गया और उन्हें अन्य हिन्दू जाति के लोगों के समान आदरपूर्वक जीवन जीने का अवसर प्रदान किया गया था। दलितोद्धार के लिए उनकी तीव्र इच्छा का पता उस सन्देश से भी मिलता है जो उन्होंने तार द्वारा जून 1924 में अहमदाबाद में होने वाले कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन के अवसर पर भेजा था। इस तार में कहा गया था– ''कृपा करके अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रान्तीय हिन्दू सभासदों को, जो नौकर रख सकते हैं, कहा जाए कि वे अपनी व्यक्तिगत सेवाओं के लिए जो नौकर रखें, उनमें एक नौकर अवश्य अछूतों में से एक हो। जो ऐसा न कर सकें, वह कांग्रेस के पदाधिकारी न रहें। यदि यह सम्भव न हो तो अस्पृश्यता के प्रश्न को हिन्दू समाज पर ही छोड़ दिया जाए।''

रायसाहब रामविलास शारदा ने अपने संस्मरण में उद्धृत किया है कि स्वामी श्रद्धानन्द ने उनसे अन्तिम भेंट के समय कहा था कि उन्होंने अपना शेष जीवन अछूतोद्धार और शुद्धि संगठन में लगाने का निश्चय किया था जिसके बिना आर्य जाति जीवित नहीं रह सकती है। जीवन के अन्तिम क्षणों तक उन्होंने अपने इस व्रत का पालन किया था।

आवश्यक सूचना

तपोवन आश्रम के सदस्य बनें और आश्रम द्वारा किये जा रहे जनोपयोगी कार्यों में सहयोग प्रदान करें।

साधारण सदस्य रु 1200/– प्रति वर्ष
सहायक सदस्य रु. 6000/– प्रति वर्ष
विशिष्ट सदस्य रु. 12000/– प्रति वर्ष
सम्मानित सदस्य रु. 25000/– प्रति वर्ष
विशिष्ट सम्मानित सदस्य रु. 50000/– प्रति वर्ष

आगामी महिनों में प्रस्तावित कार्यक्रमों का विवरण

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती जी द्वारा संचालित चतुर्वेद परायण यज्ञ	– 1 मार्च 2016 से 21 मार्च 2016 तक
गायत्री यज्ञ	– 19 मार्च से 21 मार्च 2016 तक
ग्रीष्मोत्सव	– 11 मई से 15 मई 2016 तक
स्वामी दीक्षानन्द स्मृति समारोह	– 15 मई 2016 तपोवन आश्रम में

अधिक जानकारी के लिए आश्रम के सचिव से दूरभाष नं० 9412051586 पर वार्ता करें।

सौजन्य से–
KUKREJA INSTITUTE OF HOTEL MANAGEMENT
DEHRADUN

ओ३म्

महान आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द

–मनमोहन कुमार आर्य

वैदिक धर्म एवं संस्कृति के उन्नयन में स्वामी श्रद्धानन्द जी का महान योगदान है। उन्होंने अपना सारा जीवन इस कार्य के लिए समर्पित किया। वैदिक धर्म के सभी सिद्धान्तों को उन्होंने अपने जीवन में धारण किया था। देश भक्ति से सराबोर वह विश्व की प्रथम धर्म–संस्कृति के मूल आधार ईश्वरीय ज्ञान ''वेद'' के अद्वितीय प्रचारकों में से एक थे। शिक्षा जगत, राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन, समाज व जाति सुधार, बिछुड़े हुए धर्म बन्धुओं की शुद्धि, दलितों के प्रति दया से भरा हृदय रखने वाले तथा उनकी रक्षा में तत्पर, आर्यसमाज के महान नेताओं में से एक, आदर्श सद्गृहस्थी, कर्तव्य पालन में अपना सर्वस्व व प्राण समर्पित वाले अद्वितीय महापुरुष थे। उनका व्यक्तित्व ऐसा है कि जिसे जानकर प्रत्येक सात्विक हृदय वाला व्यक्ति उनका अनुयायी बन जाता है। महर्षि दयानन्द के बाद आर्यसमाज और देश में उनके समान गुणों वाला व्यक्ति उत्पन्न नहीं हुआ। प्रसिद्ध आर्य वैदिक संन्यासी स्वामी डा. सत्य प्रकाश सरस्वती ने उनसे सम्बन्धित अपने कुछ संस्मरणों को प्रस्तुत करने के साथ उनके कार्यों पर अपनी राय भी दी है। इसी पर आधारित हमारा यह लेख है।

सन् 1916 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अवसर पर लखनऊ में स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने महात्मा मुंशीराम के दर्शन किए थे। 1914–15 में महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत आये थे और जनता में गांधी जी की लोकप्रियता बढ़ रही थी। नरम दल के नेता कांग्रेस से अलग हो गए थे और उन्होंने अपनी आल इण्डिया लिबरल फैडरेशन संघटित करना आरम्भ कर दिया था। गरम दल के व्यक्तियों के हृदय सम्राट् लोकमान्य तिलक जी थे। 8 अप्रैल, 1915 को गुरुकुल कांगड़ी में महात्मा मुंशीराम के आश्रम में मिस्टर गांधी आये और ''महात्मा'' गांधी बन करके वहां से निकले। महात्मा मुंशीराम जी ने ही गांधी जी को गुरुकुल में पधारने पर पहली बार उनको महात्मा शब्द से सम्बोधित किया था, यह महात्मा शब्द इसके बाद आजीवन उनके नाम के साथ जुड़ा रहा। यही गांधी जी के महात्मा गांधी बनने का इतिहास है। सन् 1916 की कांग्रेस में स्वामी सत्यप्रकाश जी ने गांधी जी और मुंशीराम जी दोनों को राष्ट्रभाषा हिन्दी सम्बन्धी एक समारोह में देखा था। दोनों की वेशभूषा की रूपरेखा बराबर उनकी आंखों के सामने बनी रही, ऐसा उन्होंने अपने लेख में वर्णित किया है। तब वहां महात्मा मुंशीराम जी भव्य दाढ़ी, सुदृढ़ शरीर और गले के नीचे पीत वस्त्र में तथा गांधी जी अपनी काठियावाड़ी पगड़ी, अंगरखा और नंगे पैर उपस्थित थे। इसके बाद स्वामी सत्यप्रकाश जी प्रयाग आ गये। वहां 'आर्यकुमार सभा' के उत्सव पर स्वामी श्रद्धानन्द जी आये थे और तब स्वामी सत्यप्रकाश जी ने उन्हें निकट से देखा। स्वामी श्रद्धानन्द जी को प्रयाग में नयी सड़क के एक दुमंजिले मकान में ठहराया गया था। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने यह भी वर्णन किया है

कि 26 दिसम्बर 1919 को अमृतसर कांग्रेस में स्वामी श्रद्धानन्द स्वागताध्यक्ष थे और पं. मोतीलाल नेहरू अध्यक्ष। किम्वदन्ती है कि दोनों ने एक–दूसरे को पहचाना––दोनों सहपाठी थे बनारस, इलाहाबाद, आगरा या बरेली में से किसी स्थान पर। महात्मा मुंशीराम जी की प्रारम्भिक शिक्षा बरेली में हुई, 1873 में उच्च शिक्षा क्वीन्स कालेज बनारस में, 1880 और पुनः 1888 में कानूनी शिक्षा लाहौर में। महात्मा मुंशीराम जी का नाम श्रद्धानन्द संन्यास के बाद पड़ा। संन्यास उन्होंने 18 अप्रैल 1917 को मायापुर (कनखल) में लिया था। स्वामी सत्यप्रकाश जी सन् 1915–16 में इन्द्र विद्यावाचस्पति और पौराणिकों की बातें सुना करते थे, क्योंकि 1912–16 तक सनातन धर्म सभाओं की बड़ी धूम थी––ये सनातन धर्म सभाएं धीरे–धीरे निष्क्रिय हो गयीं। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने अपने संस्मरणों में बताया है कि सन् 1925 ई. में मथुरा में जो महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी मनायी गयी थी उसके अध्यक्ष स्वामी श्रद्धानन्द थे––तब तक उनका स्वास्थ्य गिर चुका था और महात्मा नारायण स्वामी जी वस्तुतः उस समारोह के कार्यकर्ता अध्यक्ष थे। आनन्द भवन में होने वाली कांग्रेस की बैठकों में 1922 ई. के बाद भी स्वामी जी इलाहाबाद कतिपय अवसरों पर आये थे। 1921 ई. के अप्रैल मास में पं. मोतीलाल जी की पुत्री विजयलक्ष्मी के विवाह में भी स्वामी श्रद्धानन्द जी सम्मिलित हुए थे पर मोपला काण्ड (मालाबार, केरल) के बाद श्रद्धानन्द जी कांग्रेस से धीरे–धीरे अलग हो गये। स्वामी दयानन्द ने मृत्यु के समय आर्यसमाज का नेतृत्व किसी व्यक्ति के हाथ में नहीं छोड़ा था। ईश्वर के भरोसे मानों वे चल दिये। 1883 ई. के बाद स्वयं ही आर्यसमाज में 'व्यक्तियों' का प्रादुर्भाव हुआ। इन व्यक्तियों में श्रद्धानन्द का इतिहास ही आर्यसमाज का इतिहास है। इस युग के अन्य लोगों में महात्मा हंसराज, पं. गुरुदत्त, पं. लेखराम, लाला लाजपतराय, स्वामी दर्शनानन्द और स्वामी नित्यानन्द का भी अभूतपूर्व व्यक्तित्व था। स्वामी सत्यप्रकाश जी के अनुसार स्वामी श्रद्धानन्द ने इस शती के प्रथम पाद में भारत के इतिहास में मार्मिक भूमिका निभायी। आर्यसमाज में दयानन्द के बाद श्रद्धानन्द–सा दूसरा व्यक्ति देखने में नहीं आया। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की 1924 ई. में प्रकाशित 'कल्याण–मार्ग का पथिक' आत्मकथा को पढ़ा, उनके पास उनका और गुरुकुल कांगड़ी में श्रद्धानन्द जी के सहयोगी आचार्य रामदेव जी द्वारा सम्पादित 'द आर्यसमाज एण्ड इट्स डिटैक्टर्स–ए विण्डिकेशन' प्रसिद्ध ग्रन्थ था। 'दुःखी दिल की पुरदर्द दास्तान' उन्होंने नहीं पढ़ी। (उर्दू में लिखित यह ग्रन्थ आर्यसमाज के आन्तरिक विग्रह की कष्ट कथा है। इसका अनुवाद हरिद्वार निवासी हिन्दी कवि श्री सुमन्त सिंह आर्य ने किया है जो प्रकाशन की प्रतीक्षा में है। कुछ विद्वान इसमें समाहित आलोचनाओं के कारण इसके प्रकाशन की आवश्यकता नहीं समझते। हमारी अनुवादक महोदय से भेंट हुई है। उन्होंने बताया कि यह ग्रन्थ उन्होंने प्रकाशनार्थ आर्यविद्वान् डा. महावीर अग्रवाल जी को दिया हुआ है।)। श्रद्धानन्द जी विषयक सबसे अधिक बातें स्वामी सत्यप्रकाश जी को स्वामी श्रद्धानन्द जी पर आस्ट्रेलियाई प्रो. जे.टी. एफ. जॉर्डन्स की पुस्तक से ज्ञात हुईं। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी पर कई टिप्पणियां की हैं। वह लिखते हैं कि गुरुकुल के असंख्य स्नातकों के कुलगुरु महात्मा मुंशीराम थे, न कि श्रद्धानन्द। मुंशीराम और श्रद्धानन्द तो दो अलग व्यक्तित्व हैं। मुंशीराम के रूप में वे

महात्मा थे, गांधी के अत्यन्त निकट, गुरुकुलीय प्रणाली के उन्नायक, शिक्षा के क्षेत्र में अनन्य प्रयोगी तथा टैगोर की समकक्षता के शिक्षाशास्त्री। दूसरा उनका स्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द का रहा––साम्प्रदायवादिता मिश्रित राष्ट्र–उलझनों में फंसे हुए––कभी मालवीय के साथ, कभी महासभा के साथ, कभी उनसे दूर भागते हुए अत्यन्त विवादास्पद व्यक्तित्व, कभी–कभी निर्वाचनों की उलझनों में फंस जाने वाले व्यक्ति। उसका उन्हें पुरस्कार मिला––23 दिसम्बर, 1926 ई. को सायंकाल 4 बजे दिल्ली में अब्दुल रशीद की गोलियों से बलिदान । वे सदा के लिए अमर हो गए। अंग्रेजों की संगीनों के सामने छाती खोलकर खड़ा होने वाला वीर राष्ट्रभक्त संन्यासी श्रद्धानन्द का एक यह तेजस्वी रूप था। (महर्षि दयानन्द के बाद वैदिक धर्म के 7 मार्च, 1897 को एक विधर्मी आततायी द्वारा प्रथम शहीद पण्डित) लेखराम की पंक्ति में खड़ा कर देने वाला ऋषि दयानन्द का असीम भक्त अमर शहीद श्रद्धानन्द। स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरूकुल कांगड़ी की स्थापना की और उसे अपने खून से सींचा। आज यह संस्था अपने मूल उद्‌देश्य व गौरवपूर्ण अतीत से दूर हो चुकी है। यह स्थिति हमें कई बार पीड़ा देती है। 23 दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस है। अतः इस अवसर पर उनके पावन जीवन चरित्र का अध्ययन कर अपने जीवन को सुधारा व पुण्यकारी बनाया जा सकता है। धर्म की वेदी पर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन चरित्र व उनके ग्रन्थों का अध्ययन कर ही उनको श्रद्धांजलि दी जा सकती है। स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रायः सभी ग्रन्थों को 'श्रद्धानन्द ग्रन्थावली' के नाम से लगभग 27 वर्ष पूर्व 11 खण्डों में प्रकाशित किया गया था। इसका नया भव्य एवं आकर्षक संस्करण दो खण्डों में 'विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, 4408 नई सड़क, दिल्ली' से इसी माह प्रकाशित किया गया है। हम पाठकों को इसे मंगाकर पढ़ने की संस्तुति करते हैं। आईये, स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन व कार्यों को जानकर उनसे प्रेरणा ग्रहण करें और वैदिक धर्म व संस्कृति की सेवा कर अपने जीवन को कृतार्थ एवं सफल करें।

तपोवन आश्रम देहरादून हेतु पुरोहित की आवश्यकता

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, नालापानी, देहरादून को एक व्यवहार कुशल, मृदुभाषी पुरोहित की आवश्यकता है। निःशुल्क आवास व्यवस्था के साथ मानदेय व भोजन व्यय कर्मकाण्डीय योग्यता व अनुभवानुसार देय होगा।

सम्पर्क सूत्रः श्री प्रेम प्रकाश जी शर्मा
सचिव, वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून
मो. 9412051586

सौजन्य से– **THE HERITAGE SCHOOL**
14/6, New Road, Dehradun, India

शहीद स्वामी श्रद्धानन्दजी

—स्वामी ओमानन्द सरस्वती

स्वामी श्रद्धानन्द जी एक अगाध प्रेरणा—स्रोत थे। उनकी ही प्रेरणा से आज उत्तर भारत के आर्यसमाज में वर्तमान जागृति है। हरियाणा में जो आर्यसमाज का प्रचार है वह उनकी ही प्रेरणा का फल है। उनकी प्रेरणा से ही प्रारम्भ में हरियाणा में चार गुरुकुलों की स्थापना हुई, जिनकी आधारशिला भी उन्होंने ही रखी। सबसे पहले झज्झर गुरुकुल की आधारशिला पं. विश्वम्भरनाथजी की प्रार्थना पर स्वामी जी के कर—कमलों से रखवाई गई तथा इन्हीं की प्रेरणा से श्री पीरूसिंह जी ने मटिण्डु गुरुकुल की और भक्त फूलसिंह जी ने भैंसवाल गुरुकुल की स्थापना की। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ तथा गुरुकुल कुरुक्षेत्र की स्थापना भी स्वामीजी ने ही की।

हरियाणा के लोगों में शिक्षा का प्रसार स्वामी श्रद्धानन्दजी की कृपा से हुआ। उन्होंने छात्रों को छात्रवृत्ति देकर काँगड़ी गुरुकुल में शिक्षा का अवसर प्रदान किया तथा प्रचारक, उपदेशक और शिक्षक उत्पन्न हुए। पं० समरसिंह जी, आचार्य प्रियव्रत जी, स्वामी व्रतानन्दजी, आचार्य रामनाथ जी वेदालङ्कार, डॉ. सत्यकेतु विद्यालङ्कार, श्री क्षितीश वेदालङ्कार, डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार आदि विद्वान उन्हीं की देन हैं, जो आज भी देश—विदेश में प्रचार कर रहे हैं। श्री सत्यमेवजी भारद्वाज— जिन्होंने कुछ दिन पहले अपनी मातृ संस्था गुरुकुल के लिए एक लाख रुपये दान दिये हैं तथा विदेशों में प्रचार कार्य कर रहे हैं— कुल माता की ही सन्तान हैं।

स्वामी श्रद्धानन्दजी एक दूरदर्शी संन्यासी थे, जिन्होंने भविष्य के विनाश को ध्यान में रखते हुए जबरदस्ती मुसलमान बने हुए लोगों को शुद्ध करने का कार्य जोरों से किया। एक बार की घटना है। यह वह समय था, जब लोग कहा करते थे—

हुई शुद्ध मथुरा, आरम्भ आगरा है।
करके छोड़ेंगे देखो हसर देख लेना।

उस समय 20 हज़ार मलखाने राजपूत शुद्धि के लिए तैयार थे। वेदी तैयार थी। शुद्धि संस्कार के आरम्भ होने से थोड़ा पहले राजपूत नेता ने किसी दूसरे अवसर पर शुद्ध होने की बात कही। विकट समस्या थी, क्योंकि वे लोग उस समय शुद्ध न होते तो वे मुसलमान ही बने रहते। स्वामी जी ने स्थिति को समझते हुए नीति के साथ काम लिया और एक समझदार व्यक्ति को चौधरी के दिल की टोह लेने भेज दिया। चौधरी के मन में लोभ था। स्वामी जी के साथ सेठ जुगलकिशोर जी बिरला भी थे। स्वामी जी ने चौधरी को बुलाया और 20 हजार रुपये देकर समझाया। युक्ति काम कर गई और 20 हज़ार मलखानों ने उसी समय यज्ञोपवीत धारण कर लिये। इस तरह एक—एक रुपये में एक व्यक्ति की शुद्धि हो गई। इसके बाद मलखाने राजपूतों ने कहा 'हमारी शुद्धि का क्या लाभ? राजपूत लोग हमसे हुक्के—पानी का व्यवहार तो करते ही नहीं...।' राजपूत तो पहले से ही शुद्धि के विरुद्ध थे। स्वामी जी के पास एक राजपूत आर्योपदेशक थे श्री इन्द्रवर्मा, जो कि पहले हुक्का पीते थे। स्वामी जी ने इन्द्रवर्मा

को समझाया कि हुक्का पीना कोई अच्छी बात तो नहीं है। पर इस अवसर पर इन लोगों के साथ दो घूंट हुक्का पी लो, इसमें कोई हानि नहीं होगी। श्री इन्द्रवर्मा ने उनके साथ बैठकर हुक्का पिया। अब लोग जयनाद के साथ उठ खड़े हुए। इस तरह नीति–कुशलता और दूरदर्शिता से शुद्धि का चक्र चलाया।

नीति कुशलता और कार्य कुशलता के कारण ही शुद्धि का कार्य इतने ज़ोरों से चला था। इनकी कार्यकुशलता की एक और घटना है। उस समय मुसलमान हिन्दुओं की लड़कियों, ज्यादातर विधवाओं को बलपूर्वक उठाकर ले जाते थे। एक मुसलमान जेहलम से एक हिन्दू लड़की को बादली गुलिया में ले आया। पटवारी अमरसिंह आर्य ने स्वामीजी को सूचना दी। स्वामी जी ने बल्लभ पण्डित को मौलवी के रूप में भेजा तथा एक उपदेशिका को नर्स के रूप में भेजा। इन दोनों की सहायता से उस लड़की को वहाँ से निकाला। इस तरह स्वामी जी ने हज़ारों कन्याओं और विधवाओं की रक्षा की।

पाकिस्तान बनने की घटना और अभी घटी मीनाक्षीपुरम् की घटना हमें स्वामी श्रद्धानन्दजी के बलिदान की याद दिलाकर आज भी शुद्धि कार्य की आवश्यकता को प्रकट कर रही है। शुद्धि का कार्य पहले से भी ज़ोरों से चलाने की आवश्यकता है, अन्यथा भविष्य में इससे भी बुरे परिणाम होंगे। शुद्धि कार्य को आगे बढ़ाना ही स्वामी श्रद्धानन्दजी के लिए सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

श्रीमती रामदेवी अरोड़ा दिवंगत

श्रीमती रामदेवी अरोड़ा का एक लंबी बीमारी के बाद दिनांक 8 दिसम्बर 2015 को निधन हो गया। निधन का समाचार सुनकर देहरादून जनपद के आर्य बन्धु एवं माताएं उनके आवास पर एकत्रित होना शुरु हो गए। माता रामदेवी अरोड़ा का जीवन समाज के लिए पूर्ण समर्पित था। वह आर्य समाज धामावाला की आजन्म सक्रिय सदस्य रही तथा अखिल भारतीय महिला आश्रम देहरादून के प्रधान पद को लम्बे समय तक सुशोभित किया। उनके अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप अनेक संस्थाएं महिला आश्रम के साथ सम्बद्ध हुई जिसके कारण आश्रम को नया स्वरूप प्रदान किया जा सका। आज महिला आश्रम में 60 बच्चों के आवास एवं भोजन की उचित व्यवस्था है तथा वृद्ध महिलाओं के रहने के लिए वृद्धाश्रम बना हुआ है। श्रीमती रामदेवी अरोड़ा ने अपने कार्यकाल में जूनियर हाईस्कूल, वृद्धाश्रम, भोजनालय का भव्य हॉल, औषधालय, यज्ञशाला एवं सत्संग भवन का निर्माण कराया। आश्रम में निवास करने वाली कन्याओं के लिए एक बड़ी धनराशि एफ.डी.के रूप में बैंक में जमा कराई। महिला आश्रम देहरादून सदैव इस आर्यदेवी के कार्यों को याद रखेगा। श्रीमती रामदेवी अरोड़ा ने अपनी बहुमुखी प्रतिभा से वैदिक साधन आश्रम तपोवन के संचालन में एक सक्रिय कार्यकारिणी सदस्य के रूप में अनेक वर्षों तक अहम भूमिका निभाई। उत्सवों के अवसर पर अतिथियों के भोजन की समस्त व्यवस्था वही सम्भालती थी। श्रीमती रामदेवी अरोड़ा की मृत्यु से आर्यसमाज ने एक कर्मयोगी, गरीबों की हितैषी, माँ के समान स्नेहशील देवी को खो दिया है जिसकी प्रतिपूर्ति निकट भविष्य में संभव प्रतीत नहीं होती।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन के सभी सदस्य परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि माता रामदेवी अरोड़ा की दिवंगत आत्मा को अपनी न्याय व्यवस्था के अनुसार मोक्षगामी बनाये और उनके परिवारजनों को इस गहन दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करें।

मेरे ज्योतिस्तम्भ-स्वामी श्रद्धानन्द

—श्री सन्तराम बी.ए.

महापुरुषों की तुलना करना प्रायः विरक्तिकर होता है, फिर भी कहना पड़ता है कि दयानन्द के बाद आर्यसमाज में ही नहीं, वरन् समूचे भारत में जो महान् व्यक्ति हुए हैं उनमें स्वामी श्रद्धानन्द की शान निराली है। जैसे किसी पर्वतमाला की अनेक चोटियाँ होती हैं और वे सब अपने–अपने स्थान पर सुन्दर प्रतीत होती हैं, पर उन सब में एक पर्वत –श्रृंग विशेष रूप से ऊँचा उठकर दर्शकों को दूर से अपनी भव्यता से और अनोखेपन के कारण आकर्षित करता है, वैसे ही श्रद्धानन्द थे। रूस के ऋषि काऊंट टालस्टाय की भांति उनका प्रारम्भिक जीवन उतना अच्छा न था, पर उनकी आत्मा प्रगतिशील थी। हम उन्हें बुराइयों के विरुद्ध संघर्ष करके प्रतिक्षण ऊपर उठता पाते हैं। अन्त में वे इतने ऊंचे उठ गये कि उनको देखने के लिए सिर को पीछे की ओर झुकाना पड़ता था।

स्वामी जी के महान् व्यक्तित्व का प्रभाव मुझ पर मेरे कॉलेज के दिनों में ही पड़ चुका था। सन् 1906 की बात है। मैं गवर्नमेण्ट कॉलेज लाहौर के तीसरे वर्ष में पढ़ा करता था। मैंने कांगड़ी के गुरुकुल की महिमा सुनी। उसको देखने की इच्छा मन में प्रबल हो उठी। अपने सहपाठी मित्र श्री भगवानदास को लेकर मैं हरिद्वार पहुँचा। उन दिनों गुरुकुल गंगा की नीलधारा के उस पार एक घने जंगल में अवस्थित था। हरिद्वार के पण्डे–पुरोहित उसका पता बताने से भी इन्कार करते थे। हमारे पूछने पर उन्होंने कहा कि गुरुकुल वाले यहां से अपना डेरा–डण्डा उठा ले गये हैं। यह सुनकर हमें बड़ी निराशा हुई परन्तु अधिक खोज करने पर हमें गुरुकुल का मार्ग मालूम हो गया। हमने नाव से बड़ी गंगा को पार किया और नीलधारा में से पैदल लांघकर गुरुकुल में जा पहुँचे। महात्मा मुंशी राम जी का भव्य मुखारविन्द और प्रेम पूर्ण सत्कार ने हमें मोहित कर लिया। हम मार्ग का सारा कष्ट भूल गये। आचार्य रामदेव जी ने हमें सारा गुरुकुल दिखाया। हमने देखा, लड़कों को हिन्दी में ड्रिल कराई जा रही है। मैं कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था कि ड्रिल में प्रयुक्त होने वाले शब्द हिन्दी में भी हो सकते हैं। देखकर बड़ा विस्मय हुआ। मैंने कहा– 'आप ड्रिल तो हिन्दी में कराते हैं, पर रसायन शास्त्र और भौतिक विज्ञान किस भाषा में पढ़ाते हैं' आचार्य जी ने कहा 'चलिये आपको वह भी दिखा देते हैं।' इस पर वे हमें रसायन –अध्यापन के कमरे में ले गये। वहाँ श्यामपट्ट पर रसायन –शास्त्र की हिन्दी परिभाषाएँ देखकर मेरे आश्चर्य की कोई सीमा न रही। मैंने अनुभव किया कि गुरुकुल ही राष्ट्रीय महाविद्यालय कहलाने का सच्चा अधिकारी है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रति मेरे मन में अगाध श्रद्धा है। उन्होंने मेरे जीवन में एक बहुत बड़े ज्योति–स्तम्भ का कार्य किया है। उनकी कृपा से ही मैंने हिन्दी पढ़ना–लिखना सीखा। मैं उनके उर्दू पत्र 'सद्धर्म प्रचारक' को बड़े प्रेम से पढ़ा करता था। स्वामी जी ने जब उसे उर्दू में बन्द कर हिन्दी में निकालना आरम्भ किया तो मुझे भी उसके प्रेम से विवश होकर उसे पढ़ने के लिए हिन्दी सीखनी पड़ी। मेरी ही भांति अन्य बहुत से भाइयों ने सद्धर्म प्रचारक पढ़ने के लिए हिन्दी सीखी थी। मैं मानता हूँ कि यह उनका मुझ पर एक बड़ा उपकार था।

मेरे जीवन के गत 25 वर्ष जातपांत के विरुद्ध संघर्ष करने में बीते हैं। कुछ मित्रों के साथ मिलकर मैंने सन् 1922 में लाहौर में जातपांत –तोड़क–मण्डल स्थापित किया था। हमें चारों ओर से हतोत्साहित किया जाता था। मुझे पूरी तरह स्मरण है कि स्थानीय आर्य–नेताओं के निष्क्रिय प्रतिरोध के कारण एक वर्ष हमें अपने वार्षिक सम्मेलन के लिए कोई प्रधान मिलना कठिन हो गया था। स्वामी श्रद्धानन्द उस वर्ष लाहौर आर्यसमाज से कुछ अप्रसन्न थे। उन्होंने उसके वार्षिकोत्सव पर आने से इन्कार कर दिया पर जातपात तोड़क मण्डल की प्रार्थना पर उन्होंने हमारा प्रधान बनना स्वीकार करके हमारी मान–रक्षा की थी। सभापति के आसन से बोलते हुए उन्होंने तब कहा था– 'मुझे पता नहीं था कि आर्यसमाजी लोग जातपात तोड़ने से इतना भयभीत हैं। आज इस प्लेटफार्म पर एक भी आर्य नेता को न देख मुझे दुःख हो रहा है। मुझे ऐसा पता होता तो मैं गुरुकुल न बनाकर जात–पांत तोडक मंडल ही बनाता। उनकी इस अमरवाणी से मण्डल के कार्यकर्ताओं को बड़ा भारी उत्साह मिला था। वे सदा हमारे लिए प्रकाश –स्तम्भ बने रहे। जातपांत तोड़ने के आन्दोलन की कठिनाइयों को देखकर जब भी मेरा उतसाह भंग होने लगता था, उस ज्योति–स्तम्भ से मैं नवजीवन पाने लगता था। उन्होंने उस घोर अन्धकार के समय में जब पंजाब में परदा प्रथा तक को दूर करना कठिन था, अपनी बेटी और बेटों का विवाह जाति –भेद को तोड़कर करते हुए आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया था।

एक समय था, जब आर्यसमाज पर बड़ी भारी विपत्ति आई हुई थी। आर्यसमाज को विद्रोही ठहराकर ब्रिटिश सरकार कुचल डालने पर तुली हुई थी। पटियाला में आर्यसमाजियों पर राजद्रोह का अभियोग चल रहा था। सत्यार्थप्रकाश को जब्त किया जा रहा था। लाला लाजपतराय कारागार में डाल दिये गये थे। आर्यसमाज के एक विभाग ने डर कर उनका नाम अपने सदस्यों की सूची से काट डाला था। आर्यसमाजी कहलाना अपने को भारी खतरे में डालना था। चारों ओर आर्यसमाज पर दमन का चक्र चल रहा था। ऐसे संकट काल में श्रद्धानन्द (तब महात्मा मुंशीराम) का एक व्याख्यान लाहौर की बच्छोवाली आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में हुआ। उसे सुनने का सौभाग्य मुझे भी प्राप्त हुआ था। उसे मैं आज तक नहीं भूला हूँ और शायद इस जीवन में भूल नहीं सकूंगा।

बीस–पच्चीस हजार नर–नारी पण्डाल में खचाखच भरे थे। भय के कारण सब डरे हुए थे। पण्डाल में एक ओर पुलिस के देसी और अंग्रेज अफसर हथकडियाँ लिये बैठे थे। सभी की जिह्वा पर था कि आज महात्मा जी को गिरफ्तार कर लिया जायेगा। जनता सांस रोके अपने महान् नेता का आदेश सुनने के लिए चुपचाप बैठी थी। गैस के बड़े–बड़े लैम्पों की सायं–सायं के सिवाय और कोई शब्द सुनाई न पड़ता था। इतने में उन्नत ललाट, नग्न सिर, पीताम्बरधारी, लम्बी दाढ़ी वाले एक विशालकाय मनुष्य वेदी पर खड़े हुए। उनको देखते ही पण्डाल करतल ध्वनि से गूंज उठा। मनुष्य नहीं, वह देवता था। लाखों मनुष्यों की भावना उसके हृदय में भरी थी। वह युग पुरुष था। आर्यजगत् उसकी जिह्वा से बोल रहा था। वे थे महात्मा मुंशीराम। उन्होंने उस समय अपना व्याख्यान आरम्भ करने से पहले भगवान् से जो प्रार्थना की वह आज भी मेरे कानों में गूंज रही है। उन्होंने कहा– "हे घट–घट वासी,

रोम–रोम में रम रहे परमेश्वर! हे नर और नारी के सृजनहार! मुझे यहाँ बोले हुए शब्द केवल भारत–मण्डल में ही नहीं, वरन् इंग्लैण्ड की पार्लियामेण्ट के भवन के ऊपर से गुंजते हुए उस जगदीश्वर के चरणों में पहुँचे, जिसके सामने बड़े–बड़े ताजदार भी सिर झुकाते हैं।" इनके इन शब्दों में बिजली भरी थी। सारा वायुमण्डल प्रभावित हो उठा। सबके गले भर आए। महात्माजी ने आगे कहा कि "मुझसे पूछा जाता है कि व्याख्यान देने तो चले हो, पर क्या अपना भाषण लिख भी लिया है, आज तुम्हारे एक–एक शब्द को लेकर तुम्हें दण्ड दिया जायेगा। मैं पूछने वाले भाइयों से कहता हूँ, मेरा कोई सेक्रेटरी नहीं जो मेरे लिए व्याख्यान के नोट लिखे, मैंने अपने को सत्यस्वरूप परमेश्वर के भरोसे पर छोड़ दिया है– सरे तसलीम खम है, जो मिजाज़े यार में आए। सत्य के प्रकाश के लिए सब कष्ट और दण्ड सहन कर लूंगा।" मालूम नहीं उनकी वाणी में क्या जादू भरा था। श्रोतागण के नेत्रों से अश्रुधारा बह रही थी। उनका व्याख्यान अबाध गति से कोई पौने दो घण्टे तक होता रहा, पर श्रोतागण चित्रवत बैठे रहे। उनकी उस दिन की निर्भीकता और प्रभु–विश्वास ने कट्टर सनातनधर्मियों को भी उनका बना दिया था।

स्वामी श्रद्धानन्दजी यों तो अनेक देवदुर्लभ सद्‌गुणों की ख़ान थे परन्तु उनका एक बड़ा सद्‌गुण मन–वचन और कर्म की एकता था। वे जिस बात को मानते थे उस पर स्वयं आचरण करते थे। जब उन्होंने गुरुकुल की स्थापना की तो अपने दोनों पुत्रों के सांसारिक भविष्य की कुछ भी परवाह न करके सबसे पहले उन्हीं को गुरुकुल में प्रवेश दिलाया। मन–वचन और कर्म की ऐसी एकता बहुत कम लोगों में देखने को मिलती है। स्वामी जी ने एक समय की एक घटना मुझे सुनाई थी जो इस प्रकार है– दिल्ली के प्रसिद्ध सेठ स्व. सुल्तानसिंह ने स्वामी जी को भोजन के लिए बुलाया। स्वामी जी जिस कमरे में बैठे भोजन कर रहे थे उसके निकट ही दूसरे कमरे में पं. मदनमोहन मालवीय और पं. दीनदयाल भी उसी समय भोजन कर रहे थे। परन्तु उन्हें पता नहीं था कि साथ के कमरे में स्वामी जी भी हैं।

पं. मालवीय जी ने पं. दीनदयाल से कहा– 'पण्डितजी, मुझ से विधवाओं का दुःख देखा नहीं जाता।' इस पर पं दीनदयाल ने कहा– 'मालवीय जी, पर सनातनधर्मी हिन्दू तो विधवा–विवाह नहीं मानेंगे, क्या किया जाये?' यह सुनकर मालवीय जी बोले– 'व्याख्यान देकर, एक बार रुला तो मैं दूंगा, सम्भाल आप लें।' इन दोनों के इस वार्तालाप को सुनकर स्वामी श्रद्धानन्दजी को अत्यन्त खेद हुआ और वे मन ही मन सोचने लगे कि देखिये, ये लोग हृदय से तो विधवा–विवाह के पक्ष में हैं, परन्तु बाहर जनता में अपना मत कहने का साहस नहीं रखते, बल्कि व्याख्यानों में विधवा विवाह का विरोध करते हुए इसे धर्म के विरुद्ध ठहराते हैं।

इस प्रकार स्वामी जी का जीवन तो शानदार था ही, परन्तु उनका बलिदान भी कुछ कम न था। जैसे, सुकरात, ईसा, और दयानन्द जैसे समाज–सुधारकों को विष खाना और शूली पर चढ़ाना पड़ा, वैसे ही स्वामी जी को गोली का शिकार होना पड़ा। ऐसे महान् आत्मा के श्री चरणों में हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

With Best Compliments From :

KAMAL PLASTOMET

930/1, Behrampur Road, Village Khandsa, Gurgaon-122 001 (Haryana), Tel. : 0124-4034471, E-mail : krigurgaon@rediffmail.com

शुद्धि आन्दोलन और अस्पृश्यता निवारण

–स्वामी श्रद्धानन्द

शुद्धि–आन्दोलन का कट्टर हिन्दुओं द्वारा प्रबल विरोध किये जाने के कारण यह प्रतीत होने लगा कि अछूतोद्धार का कार्य लगभग असम्भव हो जायेगा। परन्तु आर्यसमाज ने हल पर अपना दृढ़ हाथ रखकर भूमि को सुधार बीज बोये जा सकने योग्य बनाना नहीं छोड़ा। सबसे प्रथम रहतियों की सामूहिक शुद्धि की गई। यह एक सिक्खों का वर्ग था, परन्तु खालसा लोग भी इन्हें अपने साथ दरी पर बैठने का अधिकार नहीं देते थे। सिक्ख –धर्म के संस्थापक श्री गुरु गोविन्दसिंह ने स्वयं इस वर्ग को 'कृपाण' द्वारा तैयार अमृत पिलाकर सिख–धर्म में दीक्षित किया था। सन् 1896 के मध्य में इस वर्ग के लोगों ने अपनी शुद्धि के लिए प्रार्थना की ओर अगले कुछ मासों में एक हजार से भी अधिक व्यक्ति आर्यसमाज में, भाइयों के रूप में प्रविष्ट कर लिये गए, और आर्यसमाजियों का सामाजिक एवं जाति–बहिष्कार किया गया, परन्तु 1898 के अन्त तक यह विरोध–भाव समाप्त हो गया और लगभग एक हजार रहतिए हिन्दू समाज में खपा लिये गए।

1902 में आर्यसमाज ने स्यालकोट (पंजाब) में मेघों के उद्धार का प्रश्न अपने हाथ में लिया। इन मेघों को भी अछूत समझा जाता था। पहले तो यहाँ भी इस कार्य का तीव्र विरोध किया गया। हिन्दुओं द्वारा इन नये आर्यसमाजियों को पीड़ित करने के कार्य में मुसलमान भी सम्मिलित हो गए थे, परन्तु जब डेढ़ लाख से भी अधिक व्यक्ति अन्य आर्यों के समान अधिकार भोगने लगे तो यह विरोध अपनी प्राकृतिक मृत्यु से मर गया। और तब मुजफ्फरगढ़ और मुल्तान जिले के ओड़, पंजाब के पहाड़ी प्रदेशों के डोम हजारों की संख्या में शुद्ध किये गए एवं मेघों के उद्धार के लिए जम्बू और काश्मीर रियासत में तथा अन्यत्र आन्दोलन किया गया, परिणामतः 40 हजार से भी अधिक आर्यसमाज में प्रविष्ट हो गए और अब तक वे आते जा रहे हैं। इस प्रकार पंजाब पथप्रदर्शन करता रहा है, और पिछली 'सैंसस रिपोर्ट' (1929) से पता चलता है कि संयुक्त–प्रान्त के आगरा और अवध का ईसाई मिशन इस बात की शिकायत करने लगा है कि उनके द्वारा संचालित धर्म–परिवर्तन के कार्य में आर्यसमाजियों द्वारा रुकावटें डाली जाती हैं।

दिल्ली तथा उसके आस–पास, आर्यसमाज उन सैकड़ों अछूतो को पुनः हिन्दू धर्म में ले आया जो केवल नाम–मात्र के ईसाई थे। हजारों धनकों, चमारों, रेगड़ों और भंगियों तक को भविष्य में ईसाइयों के होनेवाले आक्रमणों से बचा लिया। ईसाई मिशनरियों ने तो निराश होकर यह धर्म–परिवर्तन का कार्य ही छोड़ दिया होता, यदि उन्हें अप्रत्याशित रूप से सहायता न मिल गई होती।

हिन्दुओं के सामूहिक रूप से धर्म–परिवर्तन के लिए अत्यधिक उत्साही होते हुए भी मुसलमानों को अपना यह काम छोड़ देना पड़ा और उनका यह कार्य भाग्य के सहारे अति सूक्ष्म ढंग से होने लगा। सैंसस रिपोर्ट से यह स्पष्ट हो जाता है कि 1911 से पंजाब में तथा अन्यत्र, मुसलमान भंगियों की संख्या कम हो गई है जबकि अनुपात से हिन्दू भंगियों की संख्या बढ़ गई है। संयुक्त प्रान्त के सम्बन्ध में 1911 की सैंसस रिपोर्ट के पृष्ठ 54 पर कहा

गया है– 'इस्लाम में धर्म–परिवर्तन के उदाहरण इतने विरल है कि उनकी उपेक्षा की जा सकती है। परन्तु असहयोग–आन्दोलन के पूर्ण यौवन के दिनों में जब महात्मा गाँधी ने स्वराज्य प्राप्त करने की शर्तों में एक यह भी शर्त रख दी कि अछूत वर्ण को हिन्दुओं में पूर्णरूप से मिला लिया जाय और उनका उद्धार किया जाय तो मुसलमान नेताओं ने इसे एक स्वर्ण अवसर समझा और हिन्दू अछूतों को इस्लाम में दीक्षित करने का एक आयोजन प्रारम्भ कर दिया।

मेरे लिए तो अस्पृश्यता के अभिशाप को उखाड़ फेंकना भारतीय राष्ट्रीयता की सुरक्षा के लिए एक आवश्यक शर्त है। अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा (कांग्रेस) के 34वें अधिवेशन की स्वागत–समिति के अध्यक्ष पद से 20 दिसम्बर 1919 को अमृतसर में बोलते हुए मैंने राष्ट्रीयता को संकट में से निकालने के लिए, राष्ट्रीय शिक्षण और अस्पृश्यता–निवारण इन दो साधनों पर बल दिया था। अस्पृश्यता –निवारण के सम्बन्ध में मैंने कहा था

"राष्ट्र में एक वस्तु की कमी है, वह क्या है? मुक्ति सेना (सॉल्वेशन आर्मी) के जनरल बूथटकर ने 'सुधार योजना समिति' के सम्मुख अपने वक्तव्य में कहा था कि साड़े छः करोड़ भारतीय अछूतों को विशेष सुविधा दी जानी चाहिए क्योंकि वे ब्रिटिश सरकार के आधार स्तम्भ हैं। मैं आपसे निवेदन करुँगा कि आप इस वक्तव्य के अन्तराल में घुसकर जानने का प्रयत्न करें कि ये साड़े छः करोड़ अछूत, सरकार के आधार –स्तम्भ कैसे बन सकते हैं? जबकि आप इस पवित्र पण्डाल में इकट्ठे हुए हैं तो मैं आपसे प्रार्थना करुँगा कि आप यह शपथ उठायें कि अछूतों के प्रति आपका व्यवहार इस प्रकार का हो कि उनके बच्चे आपके बच्चों के साथ कॉलेज और स्कूलों में पढ़ सकें, आप इन्हें अपने परिवारों में उसी प्रकार घुलने–मिलने दीजिये जिस प्रकार आप स्वयं अपने परिवारों में घुलते–मिलते हैं, इसका परिणाम यह होगा कि वे आपकी राजनैतिक प्रवृत्तियों और प्रगति में आपके साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल सकेंगे। देवियों और सज्जनों आप मेरे साथ मिलकर हृदय से प्रार्थना कीजिये कि मेरा यह स्वप्न सत्य सिद्ध हो!

अमृतसर के कांग्रेस अधिवेशन के बाद मैने गुरुकुल का कार्य संभाल लिया, परन्तु जब कांग्रेस का कलकत्ते में विशेष अधिवेशन हुआ तो मैं केवलमात्र इस कारण उसमें सम्मिलित हुआ क्योंकि मैंने स्वागत–समिति को एक प्रस्ताव भेजा हुआ था, जिसमें उस महान् राष्ट्रीय असेम्बली से यह प्रार्थना की गई थी कि वह कांग्रेसी प्रोग्रामों की सूची में अछूतोद्धार के कार्यक्रम को सम्मिलित कर ले। परन्तु दुर्भाग्य से उस प्रस्ताव पर विषय–समिति तक में विचार करने की आवश्यकता नहीं समझी गई।

नागपुर के कांग्रेस–अधिवेशन से पूर्व महात्मा गांधी मद्रास गए थे वहाँ दलित– जाति के लोगों ने अपनी स्थिति के सम्बन्ध में इस प्रकार के प्रश्न गांधी जी से किये कि वे हकला गए और उसके बाद स्वराज्य–प्राप्ति के लिए यह भी एक शर्त लगा दी कि 12 मास के अन्दर–अन्दर अस्पृश्यता दूर कर दी जानी चाहिए।

गुरुकुल का प्रबन्ध दूसरे हाथों में सौंपकर जब मैं 15 अगस्त 1921 को दिल्ली पहुँचा तो दलितों का प्रश्न उग्ररूप धारण कर चुका था। तब मैंने दिल्ली में दलितोंद्धार–सभा का संगठन किया और महात्मा गांधी को कार्यसमिति से आर्थिक सहायता दिलाने के लिए तार दिया परन्तु बाद में मुझे पता लगा कि कांग्रेस इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कर सकती, और 9 सितम्बर 1921 को मैंने एक पत्र हिन्दी में महात्मा जी को लिखा था, उसका कुछ भाग इस प्रकार है–

"मैंने लाहौर से तार दिया था कि मैं चाहता हूँ कि प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के द्वारा

आर्थिक सहायता दी जाय, परन्तु दिल्ली पहुँचने पर मुझे ज्ञात हुआ कि कांग्रेस के लिए अछूतोद्वार–कार्य के लिए व्यय करना असम्भव है। दिल्ली और आगरा के चमारों की केवल मात्र यह माँग थी कि उन्हें उन कुओं से पानी भरने दिया जाय, जिनसे हिन्दू और मुसलमान दोनों पानी भरते हैं और उन्हें पानी पत्तों द्वारा पिलाया जाया करे। मैं अनुभव करता हूँ कि कांग्रेस–कमेटी के लिए केवल इस माँग को भी पूरा करा सकना सम्भव नहीं है। केवल इतना ही नहीं मैंने जिस कांग्रेसी मुसलमान से इस कार्य के लिए सहायता माँगी, उसने उत्तर दिया कि यदि सार्वजनिक कुओं से हिन्दुओं ने अछूतों को पानी भरने की आज्ञा दे भी दी, तो मुसलमान उन्हें बल–प्रयोग द्वारा कुओं से भगा देंगे क्योंकि चमार मुर्दा पशुओं का मांस खाते हैं। मैं अपने अनुभव से कह सकता हूँ कि इन चमारों में से हज़ारों शराब और मांस को छूते भी नहीं हैं, और जिन्हे मुर्दा–मांस खाने की लत पड़ भी गई है अब वे भी आर्यसमाज के प्रचार के परिणामस्वरूप अपनी इस आदत को छोड़ते जा रहे हैं। मैंने यह पत्र आपको केवल सूचना देने के लिए लिखा है कि अब, मैं कांग्रेस कार्य समिति से आर्थिक सहायता के लिए प्रार्थना नहीं कर सकता। मैं अपने सीमित स्रोतों के अनुसार जो कुछ कर सकता हूँ, वह सब करूँगा।”

एक अवसर और उपस्थित हुआ जब मैं ने लखनऊ में होने वाले कांग्रेस के अधिवेशन के समय यह प्रयत्न किया कि कांग्रेस सच्चे हृदय से अस्पृश्यता–निवारण के प्रश्न को अपने हाथ में ले ले, परन्तु इस पत्र व्यवहार का कुछ परिणाम नहीं निकला। इस पत्र व्यवहार को मैंने ‘माई पार्टिग एडवाइस’ के नाम से कुछ समय पूर्व प्रकाशित कर दिया था और वहाँ देखा जा सकता है।

साधना की सीढ़ी

स्थूल शरीर, सूक्ष्म शरीर व कारण शरीर, इन तीन सीढ़ियों से होकर ही साध्य (लक्ष्य) को पाने का प्रयास करना साधना है। शरीर को स्वस्थ व स्थिर रखकर फिर अन्तर्मुखी चेतना से सूक्ष्म तत्त्व प्राण व मन का रूपान्तर करके कारण शरीर (जीवात्मा) की खोज करने का काम ही साधना है। यह मोक्ष को सार्थक करती है। देह, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार आदि से ऊपर उठकर, तीनों गुणों (सत, रज, तम) से ऊपर उठकर तृतीय नेत्र खोलने का अभ्यास/साधना करना ही वास्तविक साधना है। इस साधना के चार सूत्र हें– अपना गुरु स्वयं बनना, कथनी और करनी में समानता होना, वाणी में संयम लाना तथा आदतों में सुधार लाना।

शिवचन्द्र सिंह

साधना पथ

योगाभ्यास एक सुनिश्चित मार्ग है, अनुभवगम्य है, भय व रोग निवारक है, तमस को मिटाता है, सात्विकता लाता है, जीवन की पहेलियों को सुलझाता है, लक्ष्य निर्धारित करने की क्षमता को बढ़ाता है, बाहरी चकाचौध पर अंकुश लाता है, शांति का फल देता है, शुभ–गुणों को अंकुरित करता है, जीवन को सार्थक बनाता है, दूसरों के प्रति शुभ भावना को लाता है। अतः योग की साधना, नियमित निष्ठापूर्वक आवश्यक धर्म समझकर करनी चाहिए। अष्टांग सोपानों पर चढ़कर ही ‘स्वस्थ’ होकर अपने लक्ष्य को साधा जा सकता है।

श्रीमती मनजीत राज्याना

गुरुकुल के वे स्मरणीय दिन

—पं० देशबन्धु विद्यालंकार

स्वनामधन्य स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज एक महान् विभूति थे। भरी जवानी में गुरुकुल खोलने का संकल्प करके घर से निकले तो सद्‌गृहस्थों से अपने नये विचार को मूर्त रूप देने के लिए धन की याचना करने से पहले अपना सर्वस्व उसमें होम कर दिया। अचल सम्पत्ति में तलवन की कोठी और एक छापाखाने को गुरुकुल की आधारशिला बनाया। इतना ही नहीं, अपने दोनों होनहार पुत्रों को उस काल्पनिक गुरुकुल में सर्वप्रथम प्रविष्ट कराया। सन् 1900 में इस गुरुकुल की स्थापना हरिद्वार क्षेत्र के निकट गंगा पार शिवालिक पर्वतमाला की उपत्यका में स्थित सघन वन में की गई। सन् 1905 में मुझे भी इस गुरुकुल में प्रविष्ट होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यद्यपि मेरा अधिकांश गुरुकुलीय जीवन बालपन की अबोध अवस्था में व्यतीत हुआ तो भी कुछ संस्मरण मेरे मानस पटल पर ऐसे अंकित हैं कि मैं सौ वर्ष तक भी जीवित रहूँ तो भी उनकी छाप मिट नहीं सकती। अतः मैं अपने आपको उन अंगुलिगण्य सौभाग्यशालियों में एक मानता हूँ जो प्राचीन गुरुकुल और कुलपिता आचार्य स्वामी श्रद्धानन्दजी महाराज के सम्बन्ध में वैयक्तिक संस्मरण लिखने के वास्तविक अधिकारी हैं।

आज तो पुण्य–भूमि कहलाने वाला वह भूखण्ड झाड़ियों और वृक्षों से शून्य मैदान है, जहाँ आज से 80 वर्ष पहले दिन के 12 बजे भी हिंसक प्राणियों के दर्शन हो जाते थे। उस बीहड़ जंगल में फूँस के झोपड़े बनाकर गुरुकुल के मौलिक रूप को सक्रिय रूप देने का साहस एक असाधारण साहसी व्यक्तित्व का परिचय है।

जन्म लेते ही यदि किसी बालक को वंशानुक्रमिक भयंकर रोग लग जाये तो इससे बढ़कर और क्या दुर्भाग्य हो सकता है। गुरुकुल काँगड़ी के जन्म के साथ भी इसी प्रकार का एक रोग लग गया। स्वामी जी के स्वास्थ्य, शिक्षा, रहन–सहन आदि के सभी विचार इतने अधिक क्रान्तिकारी थे कि उनको प्रारम्भ से ही अपने सहयोगी कहलाने वालों का आन्तरिक विरोध सहना पड़ा। इन विपरीत परिस्थितयों में भी स्वामीजी ने गुरुकुल की कतिपय विशेषताओं को अक्षुण्ण रखा। जन–सम्पर्क, मातृभाषा शिक्षा का माध्यम, संस्कृत की ऊँची शिक्षा, सादा रहन–सहन आदि विशेषताओं को कार्य रूप देने के लिए जितने अधिक समय की आवश्यकता थी अकेले स्वामी जी उतना समय न दे सके। फिर भी गुरुकुल अपनी कुछ नवीनताओं के कारण आकर्षण का केन्द्र बन गया। सन् 1912 के बाद निरन्तर गुरुकुल को सरकारी उच्च अधिकारियों और विदेशी चिन्तकों का आतिथेय बनना पड़ा।

इसी लोकप्रियता के युग में वह अविस्मरणीय घटना घटित होती है, जब प्रथम विश्वयुद्ध के दिनों में मिस्टर गाँधी (उस समय तक महात्मा नहीं हुये थे) का सत्याग्रह बीज रूप में दक्षिण अफ्रीका में चल रहा था। आचार्य महात्मा मुंशीराम जी के आदेश से गुरुकुल के उच्च श्रेणी के ब्रह्माचारियों और उपाध्यायों ने 14 दिन तक गंगा के तटबंध पर मिट्टी और पत्थर ढोने की मजदूरी करके और 1 महीने तक घी–दूध का परित्याग करके लगभग 1200 रुपये एकत्रित किये तथा मिस्टर गाँधी के पास भेजे। महात्मा गाँधी इस प्रेम–भेंट को भुला नहीं सके और अफ्रीका से भारत वापस आने पर आश्रम के

सब अन्तेवासियों के साथ सीधे स्वामी श्रद्धानन्द के गुरुकुल आश्रम में पधारे। वे पर्याप्त लम्बे समय तक गुरुकुल में ही रहे। उन दिनों की दो अत्यनत साधारण घटनाएँ मुझे याद हैं। एक तो यह कि महात्मा जी गाँधीजी को बड़े भय्या कहते थे और दूसरी अत्यन्त क्षुद्रपरन्तु आश्चर्यजनक बात यह कि उन दिनों गाँधी जी खजूर कूट–पीस कर उसके आटे की रोटी खाते थे।

वे दिन भी भुलाये न भूले जा सकते हैं, जब कि 60 व 70 हज़ार नर–नारी सूखी गंगाधारा की तपती रेत पर, पत्थरों पर पड़ी चूने की सफेदी से बनी सड़क पर पैदल चलते, भजन गाते चार मील की यात्रा करके गुरुकुल के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होने के लिए जाते थे। वह उत्साह पूर्ण वातावरण, वह भावुकता पूर्ण दृश्य भूतकाल के आर्यसमाज की सम्पत्ति है। इसके बाद सन् 1924 की गंगा की बाढ़ से उत्पन्न वह विनाशलीला भी हमने इन्हीं चर्मचक्षुओं से देखी। प्रारम्भ से ही गुरुकुल को आधुनिक रूप देने के हिमायती सहयोगियों के असिद्ध स्वप्न के साकार बनने का सुयोग आ गया। गुरुकुल की वह भौतिक सम्पत्ति– जिसमें अधिकांश कच्चे मकान थे इस बाढ़ में धाराशाही हो गये। स्वामी जी उस समय शारीरिक दृष्टि से पर्याप्त कृश हो चुके थे। सुधारवादियों, आधुनिकीकरण के पक्षपातियों को अवसर हाथ लग गया। बाढ़ से बचे रहे–सहे अवशेषों को भी समाप्त कर दिया गया। सुधारवादियों, आधुनिकीकरण के पक्षपातियों को अवसर हाथ लग गया। बाढ़ से बचे रहे–सहे अवशेषों को भी समाप्त कर दिया गया। आधुनिकीकरण की जन्मजात प्रवृत्ति ने जोर पकड़ा धीरे–धीरे गुरुकुल का जन–सम्पर्क जाता रहा और वह जनता के दान एवं चन्दे की बजाये सरकारी अनुदान पर निर्भर रहने की दिशा में अग्रसर होता गया। सरकार के अनुदान पर आश्रित होने के बाद जिस परिणाम की आशा की जा सकती थी वह आज सामने हैं।

आचार्य की शिष्यवत्सलता

मैं 12–13 वर्ष का रहा हूँगा। विषम ज्वर से पीड़ित होकर लगभग 2 मास तक संज्ञाशून्य रहा। होश में आने पर मैंने अपने का अपिरिचित कोष्ठ में पाया। कई दिन पश्चात मुझे बतलाया गया कि वह कोष्ठ स्वामी श्रद्धानन्दजी का अपना निवास–स्थान (बंगला) है। गंगा तट पर स्थित स्वामीजी का यह बंगला प्रारम्भिक गुरुकुल के इतिहास मेंएक बड़ा महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सैकड़ों बालको में से एक नगण्य बालक की परिचर्या के लिए अपने निवास की अनुकूलता का परित्याग करना उनकी गम्भीर करुणा और भारी उत्तरदायित्व की ओर संकेत करता है। इस एक प्रारम्भिक संस्मरण की याद आज भी भावावेश से साश्रु कर देती है। ऐसी थी उस आचार्य की शिष्यवत्सलता।

आचार्यजी की महानता

मैं खेल–कूद, जिम्नास्टिक, तैराकी, खेती आदि में अधिक रुचि रखता था। इसी रुचि के कारण वाटिका में मैंने एक प्लाट ले लिया था, जिसमें मूँगफली आदि बो कर आश्रम में लाता और सबको बाँट देता था। उपज को रखने के लिए आश्रमाध्यक्ष के कमरे से होकर एक कोठरी थी, जिसकी चाबी एक विद्यार्थी के पास रहती थी। एक दिन वह चाबी खो गई। उस विद्यार्थी ने कहा कि ताला तोड़कर सामान निकाल लो। मैंने ताले को मुट्टी में पकड़ कर ऐंठा तो वह टूट गया। सामान निकालकर बाँट दिया गया। इसकी सूचना आश्रमाध्यक्ष जी ने स्वामी जी को इन शब्दों में दी– 'अब तो आश्रम के ताले टूटने लगे हैं।' प्रातःकाल प्रातःराश के समय स्वामीजी स्वयं भोजनालय में पधारे और 24 घण्टे में इस अपराध के लिए क्षमा याचना के लिए कठोर शब्दों में नोटिस देकर चले गये। 24 घण्टे निकल गये। अगले दिन प्रातः स्वामी जी अपने निवास

स्थान से महाविद्यालय आश्रम की ओर आते दिखलाई पड़े। अनहोनी सी घटना थी। सौ प्रतिशत निश्चित था कि क्षमा याचना न करने पर जो दण्ड–विधान निश्चय किया गया था उसको कार्यरूप देने के लिए ही उनका आगमन हो रहा है। परन्तु यह क्या? प्रांगण में आते ही उनको ब्रह्मचारियों ने घेर लिया, प्रणाम किया और प्रतीक्षा करने लगे कि क्या आज्ञा होती है। स्वामी जी के मुख्य पर कठोरता या क्रोध के चिन्ह न थे, बल्कि न कुछ प्रसन्नता ही झलक रही थी। बोले – 'ब्रह्मचारियों! किसी भी बात का ख्याल न करना। मैंने पूछताछ करके पता लगाया कि ताला टूटने में देशबन्धु का कोई अपराध नहीं था और देशबन्धु! तुम इस घटना को आई–गई करके पहले की तरह पठन–पाठन आदि में लगे रहो।'

स्वामी जी का असिद्ध स्वप्न

1917 का साल था। मैं महाविद्यालय के अन्तिम वर्ष में प्रविष्ट हो रहा था। ईस्टर की छुट्टियों में गुरुकुल के वार्षिक उत्सव की तैयारियाँ हो रही थीं। स्नातक बनने वाले ब्रह्मचारियों में से किसी ने स्वामीजी से पत्र द्वारा निवेदन किया कि स्नातक होने से पहले हम आपसे कुछ वार्तालाप करना चाहते हैं। स्वामी जी ने कुछ सोचकर उस वार्तालाप में हमारी श्रेणी को भी बुला लिया। स्वामी जी के पूछने पर कि क्या बात करना चाहते हो, उस ब्रह्मचारी (आत्मानन्द) ने कहा– 'स्वामीजी! आर्य जनता ने हमसे जो आशाएँ लगाई थीं, क्या हम वह बन गये? उत्सव पर जो जोशीले भजन गाये जाते हैं 'आयेंगे खत अरब से जिनमें लिखा यह होगा, गुरुकुल का ब्रह्मचारी हलचल मचा रहा है।' क्या हम में वह योग्यता आ गई है, जिसकी आर्य जनता शताब्दियों से हमसे आशा करती रही है?'

कुछ देर तक स्वामीजी स्तब्ध रहे और फिर जेब से रुमाल निकाल कर मुख पर रख कर फूट–फूट कर रो पड़े। कुछ क्षण तक स्तब्ध रहने के बाद संभल कर बोले– 'पुत्रो! मैं तुमको धोखा देना नहीं चाहता। जो सुनहले स्वप्न मैंने जनता के सामने रखे थे, उनको पूरा करने में मैं बिल्कुल असमर्थ रहा हूँ। इस असमर्थता के पीछे गुरुकुल प्रणाली का दोष नहीं, मेरी असमर्थता ही कारण रही। मैं तो 10–20 बालकों को लेकर एकान्त जंगल में साधना करना चाहता था। उसके लिए बालक और उपाध्याय भी एकत्रित कर लिये, परन्तु प्रतिनिधि सभा ने इस गुरुकुल की कलपना को स्कूल और कॉलेज का पहरावा पहनाकर इसमें प्रति वर्ष भरती करके ब्रह्मचारियों की संख्या कई सौ तक पहुँचा दी। मेरे अन्दर इतने ब्रह्मचारियों का आचार्य बनने की क्षमता नहीं थी। परिणाम यह हुआ कि मैं तुम लोगों की देख–रेख नहीं कर सका और मेरा गुरुकुल खोलने का स्वप्न अधूरा ही रह गया।'

स्वामी श्रद्धानन्द (महात्मा मुंशीराम) जब गुरुकुल को प्रारम्भ कर रहे थे तो आठ–दस विद्यार्थियों के साथ–साथ अध्यापकों का भी प्रबन्ध कर चुके थे। उन अध्यापकों में से प्रमुख थे, श्री गंगा दत्त जी, श्री पं. नरदेव जी, श्री पं. भीमसेन जी आदि। गुरुकुल के प्रारम्भिक 4 वर्ष इन्हीं विद्वानों ने वहाँ की शिक्षा –दीक्षा का भार उठाया। बाद में प्रतिनिधि सभा (महाशय कृष्ण पार्टी) ने गुरुकुल के स्वरूप को बदलने का निश्चय किया। स्थानीय व्यवस्था में इतना भारी परिवर्तन किया, जो इस विद्वन्मण्डली के अनुकूल न था। परिणाम यह हुआ कि पाँचों प्रकाण्डपण्डित एक ही साथ गुरुकुल भूमि को छोड़कर गंगा पार गंगनहर के किनारे पर स्थित स्वामी दर्शनानन्द द्वारा स्थापित महाविद्यालय ज्वालापुर चले गये। सच पूछें तो स्वामी श्रद्धानन्दजी की कल्पना के गुरुकुल की अन्त्येष्टि उसी दिन हो गई थी।

अनिद्रा : कारण व उपचार

—डॉ० के०सी० ठुकराल

अनिद्रा स्नायु तंत्र का रोग है। मानव शरीर की देखरेख तथा शारीरिक अंगों का समुचित रूप से संचालन यही तंत्र अपनी नाड़ियों द्वारा करता है जो दिन–रात अपने कार्य में संलग्न रहता है।

जीवन के लिए भोजन जरूरी है, उसी प्रकार जीवन को जीने योग्य बनाये रखने के लिए निद्रा भी परम आवश्यक है। निद्रा एक ऐसी स्थिति है जब मनुष्य शारीरिक और मानसिक रूप से व्यय की हुई शक्ति पुनः अर्जित करता है। निद्रा को प्राकृतिक टॉनिक भी कहा जाता है। निद्रा अंगो की क्षतिपूर्ति करती है। वह रोगी के लिए सर्वोत्तम औषधि भी है। नींद से शरीर का मांस बढ़ता है। अतः जख्म के मरने में आसानी होती है। ऐसे अनेक जीवधारी हैं जो सर्दियों की सारी ऋतु सोये रहते हैं। उस समय उन्हें आहार की आवश्यकता भी नहीं होती और उनकी आयु सीमा अधिक होती है।

अनिद्रा का कारण : स्नायु केन्द्रों में ऑक्सीजन की कमी है। मनुष्य 24 घंटों में जितनी शुद्ध ओषजन वायु खींचता है, उसका 67% दिन में और 33% रात को लेता है। इसी प्रकार कार्बन–डाई–ऑक्साइड वायु को दिन में 58% और रात को 42% अपने अन्दर से बाहर छोड़ता है। अतः वायु में कार्बन–डाई–आक्साइड की अधिकता के कारण अचेतना या अनिद्रा होती है।

निद्रा और मूर्छा में अन्तर है। मूर्छा की अवस्था में कोई संवेदन चाहे वह कितना ही तीव्र क्यों न हो, मस्तिष्क तक नहीं पहुंचता। अनिद्रा अर्थात् नींद का न आना एक कठिन और कष्टदायी रोग है इससे आदमी पागल तक हो जाता है। अनिद्रा से स्मृति कमजोर हो जाती है ओर स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है।

अनिद्रा रोग के कारण

(1) **अस्वाभाविक जीवन :** हमारा खान–पान, रहन–सहन, आचार–विचार तथा सोना–जागना आदि सब अप्राकृतिक हो गया है, जिससे हमारे मस्तिष्क के स्नायु सदैव उत्तेजित अवस्था से बने रहते हैं और हम स्वाभाविक नींद से वंचित हो जाते हैं।

(2) शोरगुल का वातावरण भी मस्तिष्क पर प्रहार करता है जिससे नींद रफूचक्कर हो जाती है।

(3) मद्य, अल्कोहली वस्तुएं, धूम्रपान की अधिकता, चाय–कॉफी की आदत रक्त को विषाक्त बना देती है और मस्तिष्क की नाड़ियों की लचक समाप्त हो जाती है, जिससे वे स्वाभाविक रूप से सिकुड़ या फैल नहीं सकती, जो अनिंद्रा रोग का कारण बनती है।

(4) हृदय की धड़कन, अपच, गठिया, दमा, उच्च रक्तचाप, खांसी, दंत पीड़ा या अन्य किसी दर्द के कारण नींद भाग जाती है।

(5) जो लोग बात–बात में उत्तेजित होते हें ओर सोने से पहले दिन–भर के कामों की ही चिंता करते रहते हें, वे ठीक प्रकार सो नहीं पाते।

(6) रात को देर से भोजन करते ही सो जाने से पेट में गैस बनने के कारण नींद नहीं आती।

(7) अधिक उपवास करना, चिंता करना, अधिक परिश्रम करना, भय, क्रोध, अति व्यायाम या बिल्कुल न करना अनिद्रा का शिकार बनाने में सहायक हैं।

(8) दिन–भर किए गए अनैतिक कार्य हमारे

अन्तःकरण में आत्म–ग्लानि पैदा करते हैं, जिससे नींद ठीक से नहीं आती।

(9) कब्ज अनिद्रा का मुख्य कारण है। दूषित वायु व रक्त मस्तिष्क में जाकर अनिद्रा को जन्म देती है।

(10) निद्रा की औषधियाँ अनिद्रा को और अधिक बढ़ाती हैं। ऐसी कोई औषधि अब तक उपलब्ध नहीं है जो स्वाभाविक निद्रा उत्पन्न कर सके।

यौगिक उपचार

1. **शुद्धि क्रियाएं** : प्रातः उठकर शौच के बाद ठण्डे पानी का एनिमा, कुंजल, सूत्र नेति, जल नेति करें।
2. **आसन** : सूर्य नमस्कार, कटिचक्रासन, त्रिकोणासन, पश्चिमोतानासन, वज्रासन, सर्पासन, भुजंगासन, शलभासन, धनुरासन, पवनमुक्तासन, मकरासन, सर्वांगासन, मत्स्यासन तथा शवासन आदि पार्क में जाकर करें।
3. **योग निद्रा** : इसका अभ्यास प्रातः सायं अवश्य करें।
4. **प्राणायाम** : सर्दी में भस्त्रिका/सूर्य भेदी/नाड़ी शोधन प्राणायाम करें। गर्मी में उज्जायी, कपालभाति, शीतली व नाड़ी शोधन करें।
5. **ध्यान** : मन की शांति और तनाव मुक्ति के लिए नित्य प्रातः सायं कम से कम 15 मिनट का व सोने से पूर्व ध्यान करें।
6. **योग ध्वनि** : ध्यान से पूर्व पद्मासन, सिद्धासन या सुखासन में बैठकर हाथ ज्ञान मुद्रा में घुटनों पर रखकर, नेत्र बंद करके लम्बा गहरा श्वास भरकर मुंह से 'ओ' तथा होठ बंद कर 'म' का गुंजन करें। कम से कम पांच मिनट करें और ध्यान ध्वनि पर हो।
7. **शुभ चिंतन** : सदैव सकारात्मक चिंतन करें। सबके प्रति शुभ–कामना करें। इससे मन का तनाव नहीं होगा।
8. **यौगिक मालिश** : तेल (सरसों) के द्वारा कोमलतापूर्वक हृदय की ओर हाथों को लेते हुए मालिश करें। प्रातःकाल धूप में मालिश करें तो इससे नींद अच्छी आएगी।
9. **स्नान करके सोना** : नींद आने में यह भी सहायक है। इससे थकान दूर होगी, योग निद्रा करते हुए सोएं। यदि स्नान करने में असमर्थ हों तो हाथ–पैर–मुंह आदि धो लें।
10. **आहार** : भोजन सात्विक व शुद्ध हो। तेज मसाला बंद करें। उत्तेजित पदार्थ व तला–भुना न खाएं। दिन–भर में खूब पानी, मौसमी फल, सलाद अधिक लें। रात को सोते समय 2 चम्मच गेहूं का चोकर पानी से लें या ईसबगोल की भूसी दूध के साथ लें अथवा त्रिफला लें।

अन्य उपाय

- ❖ दवाइयाँ, जो सोने के लिए ली जाती हैं, उनसे बचें।
- ❖ पैर के तलवों पर तेल की मालिश या घिया की मालिश उपयोगी है।
- ❖ अपान मुद्रा (बीच की दोनों अंगुलियों के पोर को अंगूठे से स्पर्श करना) लगाकर लेटें।
- ❖ लघु शंका आदि करके सोयें।
- ❖ सोने से पूर्व नेत्र बंद कर उल्टी गिनती गिनें या दो–दो संख्या छोड़कर गिनें।
- ❖ मुस्कराइये, मूक हंसी हंसिए या अट्टाहास लगाइये और चैन से सोइये।
- ❖ घृत नेति/तेल नेति (नाक में सोने से पूर्व डालना भी एक कारगर उपाय है)।

सौजन्य से– **APEX ENGINEERS**
Gurgaon (Haryana), Mob. : 09810481720

वैदिक साधन आश्रम तपोवन को दान देने वाले दानदाताओं की सूची

क्र.स.	नाम	धनराशि	क्र.स.	नाम	धनराशि
1.	श्री ध्यान सिंह इन्द्रवाल, देहरादून	500	31.	श्रीमती मूर्ति देवी	500
2.	श्री जगदीप नागपाल, देहरादून	500	32.	श्री संतोष नारंग जी, मुरादाबाद	1200
3.	सुश्री रेणु शाह, देहरादून	500	33.	श्री जयप्रकाश व अशोक आर्य	500
4.	चौ० ओंकार सिंह, देहरादून	501	34.	श्रीमती सविता दयाल	500
5.	डॉ० नीरू हाण्डा, दिल्ली	3100	35.	श्री गुलाब चन्द आर्य, मऊ	500
6.	माता सत्या सचदेवा, राजपुरा	500	36.	श्री रमेश चन्द गुलाटी	500
7.	श्री दीनदयाल जी, दिल्ली	625	37.	डॉ० डी०एन० सचदेवा, भिवानी	500
8.	श्रीमती सविता बिष्ट, नालापानी	500	38.	श्री अनिल जी मदान, दिल्ली	2100
9.	श्रीमती कान्ता काम्बोज, सहसपुर	11000	39.	श्रीमती धर्म शीला देवी	500
10.	श्री पंकज मुंजाल जी, लुधियाना	100000	40.	श्री बसन्त वर्मन जी, कोलकाता	500
11.	श्री मानवेन्द्र जी	500	41.	श्री राम अवतार आर्य	1000
12.	श्री गिरधारी लाल आर्य	1000	42.	श्री अनिल नागपाल जी, देहरादून	1100
13.	माता सुरेन्द्र अरोड़ा जी, देहरादून	10000	43.	मै० हीरो मोटर कारपो० लि०, दिल्ली	51000
14.	माता सन्तोष रहेजा, देहरादून	5000	44.	श्री एस० चड्ढा जी, दिल्ली	5000
15.	श्री साहिल पुण्डीर जी, देहरादून	550	45.	श्री देवपाल जी, लुधियाना	1000
16.	श्री कृष्ण जी आर्य, दिल्ली	5500	46.	श्रीमती हेमलता दीक्षित, देहरादून	500
17.	श्री श्याम सिंह	550	47.	श्री सतबीर धनखड़ जी, सोनीपत	500
18.	श्री बसंत दास आर्य	500	48.	श्री सत्यवीर जी, सोनीपत	500
19.	श्री संजीव गर्ग	5000	49.	श्री आशीष चोपड़ा जी, मुम्बई	1100
20.	श्री प्रेमबल्लभ जी, देहरादून	500	50.	श्री देवप्रकाश पाहवा जी, दिल्ली	500
21.	सुश्री नागम्मा जी, तेलंगाना	1000	51.	श्री इन्द्रदेव गुप्ता जी, नौएडा	1200
22.	श्री के.पी. सिंह जी, देहरादून	1100	52.	श्री श्याम सुन्दर सोनी, गुड़गांव	15000
23.	डॉ० ओमवीर सिंह जी, देहरादून	500	53.	श्री जगदीश मदान जी, जगाधरी	1100
24.	श्री राजपाल सिंह राणा, देहरादून	1100	54.	श्री घनश्याम जी, जगाधरी	500
25.	श्री भौमिक इन्द्रवाल, देहरादून	500	55.	श्री सुमन जी, दिल्ली	1001
26.	श्री आर०के० गुप्ता जी, दिल्ली	1100	56.	श्री सुरेन्द्र कुमार काम्बोज, जगाधरी	1100
27.	श्रीमती उर्मिला सहगल, देहरादून	1200	57.	श्री इन्द्रपाल जी, शामली	500
28.	श्री सुभाष भाटिया, दिल्ली	1000	58.	श्री केशर सिंह आर्य, देहरादून	1000
29.	श्री रमेश भाटिया जी, दिल्ली	500	59.	श्री बाबूराम पाल जी, रुड़की	501
30.	श्री चन्द्रसेन गोयल, देहरादून	6000	60.	श्रीमती सुषमा सचदेवा, देहरादून	20000

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून सभी दानदाताओं का धन्यवाद करता है।

प्रबन्धक एवं चिकित्सक की आवश्यकता

- वैदिक साधन तपोवन, देहरादून को एक सुयोग्य, वैदिक विचारधारा युक्त, कम्प्यूटर का जानकार 50 वर्ष की आयु से अधिक के व्यक्ति की आवश्यकता है जो सेवाभाव से प्रबन्धन का कार्य कर सके। भोजन एवं आवास की निःशुल्क व्यवस्था की जायेगी तथा योग्यतानुसार मानदेय भी दिया जायेगा।
- तपोवन आश्रम स्थित चिकित्सालय के लिए एक एम.बी.बी.एस. डॉक्टर तथा एक बी.ए. एम.एस. डॉक्टर की आवश्यकता है। सेवानिवृत्त व्यक्तियों को वरियता दी जायेगी।

उपरोक्त पदों के लिए अपने प्रार्थना पत्र और प्रमाण पत्र आश्रम के पते पर प्रेषित करें।

सम्पर्क सूत्र : **इंजि. प्रेमप्रकाश शर्मा,** सचिव, मोब. 9412051586

वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर (प्रथम स्तर)

(6 मार्च से 13 मार्च 2016)

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून

यदि आप सत्य, सनातन वैदिक सिद्धान्त को आत्मसात् कर वैदिक साधना पद्धति के शुद्ध स्वरूप को प्रायोगिक स्तर पर समझकर स्वयं तथा ईश्वर की यथार्थ, निर्भ्रान्त अनुभूतियों को स्पर्श करना चाहते हों तो आपका वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी देहरादून में 6 मार्च सायंकाल से प्रारम्भ होकर प्रात: 13 मार्च को समाप्त होने वाले वैदिक योग प्रशिक्षण शिविर प्रथम स्तर में भाग लेना सार्थक हो सकता है।

यह शिविर आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य के मार्गदर्शन में होगा। इस शिविर में वैदिक योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण तथा योग्यता व पात्रतानुसार शंका समाधानपूर्वक साधना हेतु मार्गदर्शन दिया जायेगा। समस्त दैनिक व्यवहार में मन को चिन्ता, तनाव से रहित कर शान्त व समता में बनाये रखना किस प्रकार से सम्भव हो सकता है, इसका प्रशिक्षण भी इसके अन्तर्गत होगा।

1. यह शिविर आवासीय है। शिविर में महिलाओं व पुरुषों की निवास व्यवस्था पृथक-पृथक होती है।
2. सम्पूर्ण शिविर में विधिवत् भाग लेने के इच्छुक सज्जन ही आवेदन हेतु सम्पर्क करें। शिविर समापन से पूर्व वापिस जाना सम्भव नहीं हो सकेगा तथा 6 मार्च सायंकाल 5:00 बजे के बाद प्रवेश नहीं दिया जायेगा। इस कष्ट हेतु हम पूर्व से ही क्षमा प्रार्थी हैं।
3. प्रथम स्तर के शिविरों में भाग लेने वाले साधक ही आगे गम्भीर साधना के शिविरों में भाग ले सकेंगे।
4. शिविर में अधिकाधिक 70 साधक साधिकाओं की ही व्यवस्था सम्भव है। अत: इच्छुक जन पूर्व से ही अपना स्थान सुरक्षित करा लें। पुराने शिविरार्थी नवीन जिज्ञासुओं को अवसर व प्रोत्साहन देकर सहयोग प्रदान कर सकते हैं।
5. स्थान आरक्षण व अन्य जानकारी हेतु इन महानुभावों से सम्पर्क करें:-1. श्री नन्द किशोर अरोड़ा जी, दिल्ली, (मो. नं. - 09310444170) समय: दिन में 10:30 बजे से सायं 4:00 बजे तक, एवं रात्री 8 बजे से 10 बजे तक, 2. श्री यश वर्मा जी, यमुनानगर, मो. 09416446305 समय: प्रात: 10.00 से सायं 5.00 बजे तक 3. श्री विजेश गर्ग जी मो. 09410315022 समय: 10:00 बजे से सायं 4:00 बजे।
6. अपनी वापसी का आरक्षण पूर्व ही करा कर आयें। शिविर के मध्य अग्रिम यात्रा, हेतु आरक्षण करवाने की सुविधा हमारे पास नहीं है।
7. शिविर में भाग लेने की न्यूनतम आयु सीमा 17 वर्ष है। अपने साथ संचिका, पेन, टार्च व फल काटने हेतु चाकू अवश्य लायें। अपने साथ अपना आई.डी. प्रूफ एवं फोटो अवश्य लायें।
8. शुल्क-इस ईश्वरीय कार्य में शिविर हेतु श्रद्धा व भावनापूर्वक स्वैच्छिक सहयोग करना सभी प्रतिभागियों के लिये अनिवार्य है।
9. आवश्यकता होने पर **आचार्य आशीष जी** (मो.नं. 09410506701 से रात्रि 8:00 बजे से 9.00 बजे के मध्य सम्पर्क कर सकते है।

निवदेक

दर्शन कुमार अग्निहोत्री	**ई. प्रेम प्रकाश शर्मा**	**संतोष रहेजा**
अध्यक्ष	सचिव	उपाध्यक्षा
09710033799	09412051586	09910720157

पवमान पत्रिका के हरियाणा के उन वार्षिक ग्राहकों की सूची जिनके द्वारा शुल्क देय है

customer no.	नाम	पता	जिला	Date of Payment Received	Expiry-date	Amount due up to due month-2015
HRY 1	राम करण आर्य	गॉव व पोस्ट बालधन कला,	हरियाणा	5/3/2014	Mar-15	150
HRY 2	रतन लाल वर्मा	पुत्र श्री बसन्त लाल आर्य, चांदी के आभूषण के विक्रेता, चौक बाजार	हरियाणा	28.06.2012	Jun-15	150
HRY 3	श्री दयानन्द पटुवा	म.नं. 1004, सैक्टर–7,	हरियाणा	18-10-2013	Oct-14	300
HRY 4	प्रीति लाल आर्य	म0नं0 169 जिन्द रोड, मॉडल टाउन, कैथल	हरियाणा	21.06.2010	Apr-12	600
HRY 5	डॉ0 सुषमा वेदी	म.नं. 250, सैक्टर–19,	हरियाणा	22-2-2013	Feb-15	150
HRY 6	वीरेन्द्र भगत	म.नं 40, रूपनगर,	हरियाणा	28.06.2012	Jun-15	150
HRY 9	नवीन सम्भर वाल	द्वारा सबरवाल हॉस्पीटल, विलासपुर रोड,	हरियाणा	28.06.2012	Jun-13	450
HRY 11	घनश्याम दास गोगिया	प्लाट नं 287, राजेश कालोनी, (पश्चिम) अम्बाला मार्ग,	हरियाणा	28.06.2012	Jun-15	150
HRY 12	इन्द्र मोहन सपरा	80–81, प्रोफेसर कालोनी एक्सटेन्शन, सामने दावत ई प्लाजा, गोविन्द पुरी, पंजी.	हरियाणा	16.05.2011	May-12	600
HRY 13	दलवीर सिंह आर्य	गांव व डाकघर दादुपुर हैड़,	हरियाणा	4/12/2014	Dec-15	150
HRY 15	अरूण मुनि	ग्राम व पत्रालय बोडिया कमालपुर,	हरियाणा	7/7/2014	Jul-15	150
HRY 16	चन्द्र शेखर कौशिक	म0नं0 72 टाईप–4 थर्मल पावर कालोनी	हरियाणा	01.08.2011	Aug-12	600
HRY 16	ईश्वर सिंह आर्य	आत्म शुद्धि आश्रम, फरूखनगर	हरियाणा	08.10.2010	Oct-11	750
HRY 18	श्री अर्जुन देव नासा	75 / 12 किशन पुरा (नजदीक जैन स्थानक व डाक0 गन्नौर मण्डी	हरियाणा	29.01.2011	Jan-14	300
HRY 19	शमा सहगल	म.नं. 724, सैक्टर– 30,	हरियाणा	31-10-2013	Oct-14	300
HRY 21	लक्ष्मण दास चानना	म.नं. 175 ब्लॉक–बी, नई मण्डी,	हरियाणा	25.11.2011	Jul-12	600
HRY 22	सुरेन्द्र बाहरी,	144 यमुना एन्कलेव, जी0टी0 रोड,	हरियाणा	09.08.2011	Aug-12	600
HRY 23	पं सुरेश शास्त्री (धर्माचार्य)	म.न–1072 सैक्टर–19	हरियाणा	28-6-2014	Jun-15	150
HRY 24	जगत मुनि	डाकघर पिलाना वाया दूबलधन	हरियाणा	08.12.2011	Dec-12	600
HRY 26	साधू राम	ग्रांव अली शेरपुर, माजरा, डाकघर विलासपुर	हरियाणा	30.11.2011	Dec-12	600
HRY 27	रमा जैन,	895 / सेक्टर 15 पार्ट– 2,	हरियाणा	23.01.2012	Jan-13	450
HRY 30	अशोक कुमारी जौली	231–नजदीक पुलिस चौकी, बुढिया,	हरियाणा	21.03.2012	Mar-13	450
HRY 31	त्रिलोक चन्द आर्य	गोकुल दूध भण्डार, पुरानी सब्जी मण्डी, जगाधरी	हरियाणा	21.03.2012	Mar-13	450
HRY 32	आचार्य जी,	आर्ष गुरूकुल, कालवा	हरियाणा	22.03.2012	Mar-13	450
HRY 33	मनजीत गुलिया	द्वारा श्री आर.के. गुलिया, 814 सैक्टर–23,	हरियाणा	25.03.2012	Mar-13	450
HRY 34	अंगुरी आर्या	423 / 30 देव कालोनी, दिल्ली रोड, रोहतक	हरियाणा	24.03.2012	Mar-13	450
HRY 35	श्री कुमार सेन गोयल	5/10 लनतना अवैन्यु वाटिका सिटी सोहाना रोड़ सैक्टर–49	हरियाणा	25.08.2010	Aug-11	750
HRY 36	मधु,	द्वारा हुफ्शि शंकर, इ–80 ग्रीन वुड सिटी, सेक्टर –46	हरियाणा	28.03.2012	Mar-13	100
HRY 37	चौधरी निरंजन सिंह	गांव रामखेडी डाकखाना चंगनौली, उपतहसील– बिलासपुर,	हरियाणा	30.03.2012	Mar-14	300
HRY 38	बरखाराम, राममिस्त्री	गांव चाऊवाला डाकघर चंगनौली, उप तहसील बिबलासपुर,	हरियाणा	30.03.2012	Apr-14	300
HRY 39	जुगल किशोर कपूर	जे.के. बैटरी, अम्बाला रोड, निकट वर्मा मोटर वर्क्स जगाधरी	हरियाणा	30.03.2012	Apr-14	300
HRY 40	राकेश ग्रोवर,	म.नं. 400, वार्ड नं. 07 मंत्री आर्य समाज, बूढिया	हरियाणा	10.04.2012	Apr-14	300
HRY 41	राज के. आर्य	आर्य कुंज, वॉटर वर्क्स रोड, कालॉवाली,	हरियाणा	22.04.2012	Apr-13	450
HRY 42	प्रधान छोटे लाल आर्य	मुडिया खेडा, पोस्ट दोगडा अहीर,	हरियाणा	03.09.2014	Sep-15	150
HRY 43	श्री प्यारे लाल आर्य जी	ग्राम–तेजली स्टेडियम रोड़ डा–फतेहपुर वाया बुड़िया	हरियाणा	10.05.2014	May-15	150
HRY 45	बचन सिंह (फौजी)	गॉव फरवाला, डाकघर कन्डाईवाला,	हरियाणा	18.05.2012	May-13	450
HRY 46	प्रतिभा सैनी,	म.नं. 52 / 13 नजदीक प्रेम मन्दिर, सुभाषनगर,	हरियाणा	21.05.2012	May-13	450
HRY 48	शरबती देवी	पत्नी श्री हरबंसलाल म0नं0 69 ए कृष्णापुरी कालोनी,, नालागढ, अम्बाला रोड,	हरियाणा	30.11.2011	Nov-12	600
HRY 49	दिनेश आर्य	म.नं. 1302, ऋषिनगर,	हरियाणा	28.05.2012	May-13	450
HRY 50	शिवानी सागर	म.नं. 1302, ऋषिनगर,	हरियाणा	01.06.2012	Jun-13	450
HRY 54	श्री पवन गुप्ता,	1384, गोमती गली,	हरियाणा	18.06.2012	Jun-15	150
HRY 55	महावीर सिंह	स्व0 श्री हरकेराम लम्बरदार पता ग्राम व पो0 डाबोदा कला, (मेंहन्दीपुर,	हरियाणा	23-10-2013	Oct-14	300
HRY 56	शमशेर सिंह सन्धू	म.नं. 553, सैक्टर 7, अरबन स्टेट	हरियाणा	23.06.2011	Jun-12	600

customer no.	नाम	पता	जिला	Date of Payment Received	Expiry-date	Amount due up to due month-2015
HRY 57	श्री सत्येन्द्र कुमार तलवाड	म.नं. 246, एन– ब्लॉक, सैक्टर–51, मैहफिल गार्डन,	हरियाणा	24.04.2011	Apr-12	600
HRY 58	डॉ0 सत्येन्द्र प्रकाश	'सत्यम', 325 ए / 12, हंस एन्कलेव, एन.एच. 8	हरियाणा	6/10/2013	Oct-14	300
HRY 60	किसान बीज भण्डार	अम्बाला रोड,	हरियाणा	14.06.2012	Jun-14	300
HRY 61	रंगीलाल गर्ग,	खेडा बाजार,	हरियाणा	14.06.2012	Jun-15	150
HRY 62	जगदीश कुमार	गीता इण्ड्रस्टीज, मुखर्जी पार्क,	हरियाणा	14.06.2012	Jun-13	450
HRY 64	श्याम चन्द्र गर्ग, एड्वोकेट	द्वारिका पुरी	हरियाणा	14.06.2012	Jun-14	300
HRY 65	गोयल मशीनरी स्टोर,	स्टेट बैंक के पास, अम्बाला रोड,	हरियाणा	14.06.2012	Jun-15	150
HRY 66	कुलदीप शर्मा,	2425 / 2 राजेश कालोनी पश्चिम, अम्बाला रोड,	हरियाणा	14.06.2012	Jun-15	150
HRY 67	वेद रतन ,	द्वारा सर्व श्री पून्नू राम, श्री चन्द बर्तन विक्रेता, चौक बाजार,	हरियाणा	14.06.2012	Jun-15	150
HRY 68	अनिल कुमार	जौली बर्तन विक्रेता, द्वारा श्री चन्द एन्अर प्राईजिज, चौक बाजार,	हरियाणा	14.06.2012	Jun-15	150
HRY 69	प्रेम प्रकाश मेहता	म0नं0 732 / 23 लक्ष्मी गार्डन,	हरियाणा	18-9-2014	Sep-15	150
HRY 70	मा0 रमेश कुमार आर्य	म.नं. 306 / 3 शीतल पुरी कालोनी, नखाना रोड,	हरियाणा	18.06.2012	Jun-13	450
HRY 71	सुरेन्द्र मेंहता	4 / 82 शिवाजी नगर	हरियाणा	14-7-2014	Jul-15	150
HRY 73	जे.पी. गुप्ता	म.नं. 220, सैक्टर–19,	हरियाणा	18.06.2012	Jun-13	450
HRY 75	राजपाल आर्य	म.नं. 88, सैक्टर–6, अरबन स्टेट, करनाल	हरियाणा	25.08.2012	Aug-13	450
HRY 76	प्रभु दयाल चुटानी	पुत्र श्री प्रेमचन्द आर्य, गांव व पो0 अट्टा, तहसील सहमल	हरियाणा	02.06.2011	Jun-12	600
HRY 78	सत्य प्रिय	म.नं. 1462, सेक्टर– 13,	हरियाणा	25.06.2012	Jul-13	450
HRY 79	सुशील कुमार वर्मा	नजदीक परशुराम मंदिन अम्बाला रोड़	हरियाणा	10.07.2012	Jul-13	450
HRY 80	मलखान सिंह	ग्राम झण्डा, पो.ओ. सालेहपुर,	हरियाणा	08.05.2014	May-15	150
HRY 82	सुधा राजवंशी	706, सैक्टर–17, फरीदाबाद	हरियाणा	06.04.2010	Apr-11	750
HRY 85	हरवंश लाल	मं.नं–600, सैक्टर–24	हरियाणा	28.06.2011	Jun-12	600
HRY 86	स्नेहलता गुप्ता	म.नं. 220, सैक्टर–19,	हरियाणा	03.06.2011	May-12	600
HRY 87	सतपाल मोहन	105– 2 ए / 18, लक्ष्मी गार्डन,	हरियाणा	18-9-2014	Sep-15	150
HRY 90	दयानन्द आहुजा	म0न0 57 नन्दवानी नगर, निकट राधा कृष्ण मन्दिर,	हरियाणा	19-2-2014	Feb-15	150
HRY 91	प्रजापती	वी0 पी0 ओ0–सिवान	हरियाणा	19-2-2014	Feb-15	150
HRY 92	प्रधान/मंत्री	आर्य समाज सैण्ट्रल सेक्टर 15 फरीदाबाद	हरियाणा	19-2-2014	Feb-15	150
HRY 93	आर्य समाज मडण्ल	टाऊन यमुनानगर	हरियाणा	19-2-2015	May-15	150
HRY 94	गुलशन कुमार शाह	म0नं0 151 बी / 2, पाडा मौहल्ला,	हरियाणा	07.02.2011	Jan-12	600
HRY 95	प्रभा दीवान	द्वारा के0के0 दीवान, 908– सैक्टर 9 हुड्डा	हरियाणा	25.02.2011	Feb-12	600
HRY 96	आम प्रकाश शर्मा	c/0 श्री कुकुम सिहं शर्मा म.न. 602 वार्ड न.10 माता गेट झंझर	हरियाणा	16-2-2013	Feb-14	300
HRY 97	पृथ्वी सिंह	पुत्र श्री लाखी राम, गांव व पो0 मारखी,	हरियाणा	16-2-2013	Feb-12	600
HRY 98	महाजे	पुत्र श्री साधु राम गांव व पो0 मारखी,	हरियाणा	28.02.2012	Feb-12	600
HRY 99	उषा गुप्ता	सर्व श्री रामनारायण प्रेमनारायण, मेहन्दी गोदाम, दिल्ली गेट	हरियाणा	011.06.2011	May-12	600
HRY 100	आचार्य आजाद मुनि	आदित्य इन्टर प्राईजेज, दुकान नं0 82, गणेश मार्केट,	हरियाणा	19-10-2012	Oct-13	450
HRY 101	श्री अमर नाथ गोयल	दुकान न0 46 नई अनाज मण्डी पो0 ओ0 कालॉवाली	हरियाणा	26-10-2013	Oct-14	300
HRY 102	प्रो0 उमेश भाटिया	एच0 बी0 सी0 2163 सेक्टर – 28	हरियाणा	10-Jun-11	Jun-12	600
HRY 103	सुमन भाटिया	1671 सैक्टर–4 जिंम खाना के सामने,	हरियाणा	10-Oct-12	Oct-13	450
HRY 104	दया अग्रवाल	155 सेक्टर .19	हरियाणा	5-Dec-13	Dec-14	300
HRY 105	एस कुमार	रेडी मेट शेरूम पार्क रोड़	हरियाणा	23-10-2013	Oct-14	300
HRY 107	मांजे राम(मंगल मुनि)	ग्राम व डा0 भैणी खुर्द	हरियाणा	9-Nov-12	Nov-13	450
HRY 108	महावीर सिंह	ग्राम डा0 वादा कला (महदी पुर) जिला झज्जर	हरियाणा	18-7-2012	Jul-13	450
HRY 109	श्री इन्द्रप्रकाश मान	V-I-P-O शेरशाह जनपद सोनीपत	हरियाणा	3/3/2013	Mar-14	300
HRY 112	डा0 राजेश सिंह	म.न. एम.सी.एफ–124ए नाहर सिंह कालोनी सैक्टर–3 बल्लभगढ़	हरियाणा	11/7/2014	Jul-15	150

customer no.	नाम	पता	जिला	Date of Payment Received	Expiry-date	Amount due up to due month-2015
HRY 113	श्री आर्य चांद सिंह मान	डा.व गांव शेरशाह जिला	हरियाणा	9/3/2013	Mar-14	300
HRY 114	श्री अनिल कुमार	श्री शमशेर सिंह वी.आई.पी.ओ– वीर बागड़ा जिला	हरियाणा	3-Oct-13	Oct-14	300
HRY 115	श्री यशपाल आर्य	वी.पी.ओ. फरमान जिला	हरियाणा	10/3/2013	Oct-14	300
HRY 116	राज कुमारी	म न.364 11 गोविन्द कालानी करनाल रोड़	हरियाणा	28-3-2013	Mar-14	300
HRY 117	श्री सर्वजीत सिंह जी	सुपुत्र श्री के. विजय सिंह (लाल हवेली) ग्रा.व पो.बादली	हरियाणा	8/3/2014	Mar-15	150
HRY 121	वीरेन्द्र कुमार जी	म.न.352 सैक्टर–25 पंचकुला	हरियाणा	17-5-2013	May-14	300
HRY 122	जय प्रकाश आर्य	प्रधान आर्य समाज जवाहर नगर	हरियाणा	23-5-2013	May-14	300
HRY 123	निष्काम मुनि जी	3462 गली न. 7ए एस.जी.एम नगर एन.आई.टी	हरियाणा	31-5-2013	May-14	300
HRY 124	रूद्रदत	मकान न. 198 राम ग्लान घाटी चौड़ा बाजार	हरियाणा	3-Jun-13	Jun-14	300
HRY 125	प्रेम प्रकाश खट्टर,	बी–148, ब्रदर हुड सोसाइटी, एच– ब्लॉक, सैक्टर–16 विकासपुरी,	हरियाणा	26.05.2012	May-13	450
HRY 127	संदीप कुमार दीक्षित	c/o स्व श्री सुरज भान गांव व डाक कलोई तहसील व जिला	हरियाणा	3-Oct-13	Oct-14	300
HRY 128	सुभाष चन्द्र	c/o श्री स्व हेमराज गांव सुधिवास डा.पातवान तह.लोहारू	हरियाणा	3-Oct-13	Oct-14	300
HRY 129	अनिल कुमार	सन आफ श्री शमशेर सिंह सरपंच गांव बीर बागड़ा तह. राजोंद	हरियाणा	3-Oct-13	Oct-14	300
HRY 131	श्री रणधीर सिंह बागड़	म.न–88 चिन्तपूर्णी कालोनी खजूर वाली गली सैक्टर–14	हरियाणा	18-10-2013	Oct-14	300
HRY 132	कृष्ण कुमार जाखड़	s/o रणजीत सिंह गा. व पो. लडायन तह. मातनहेल जिला	हरियाणा	23-10-2013	Oct-14	300
HRY 133	खेम चन्द्र आर्य समाज	प्रधान गांव पोस्ट खेड़ी आसरा जिला	हरियाणा	24-10-2013	Oct-14	300
HRY 134	श्रीमती शशी बाला शर्मा	w/0 श्री राज कुमार शर्मा म.न–369 मोती नग्रर पास आर.एस पब्लिक स्कूल	हरियाणा	26-10-2013	Oct-14	300
HRY 135	श्री बलजीत सिंह	गांव सिपियावाला त0 छछरौली डा.डारपुर जिला	हरियाणा	10/5/2015	May-15	150
HRY 136	रेणु अग्रवाल	ई–12/21 प्रथम तल सैक्टर–85 बी.पी.टी.पी ईलाइट फलोर	हरियाणा	5/12/2013	Dec-14	300
HRY 137	धमेन्द्र प्रताप सिंह जी	pinewood intrnational bording school pawta main sohna road	हरियाणा	13-1-2014	Jan-15	150
HRY 138	मैसर्स रजनीश इण्टर	प्राईजेज उषा बाग अम्बाला रोड़ जगाधरी	हरियाणा	31-5-2014	May-15	150
HRY 139	धर्मपाल ज्वैलर्स	धर्म पाल आर्य गांव तेजली पो–खास	हरियाणा	31-5-2014	May-15	150
HRY 140	श्री चमनलाल वर्मा	गांव–तेजली पो–खास	हरियाणा	31-5-2014	May-15	150
HRY 141	रामधारी हलवाई	नरेश कुमार गर्ग खेड़ा बाजार जगाधरी	हरियाणा	31-5-2014	May-15	150
HRY 142	श्री पवन कुमार	छिलाईवाला प्रेसवाली गली नजदीक खेड़ा बाजार जगाधरी	हरियाणा	31-5-2014	May-15	150
HRY 143	श्री किशन चन्द्र मनचन्दा जी	3/42–ए शिवाजी नगर	हरियाणा	14-7-2014	Jul-15	150
HRY 144	श्री सुभाष चन्द्र कालड़ा जी	म.न–469 सैक्टर–47	हरियाणा	14-7-2014	Jul-15	150
HRY 149	श्री अशोक ग्रोवर जी	म.नं–139/21 मदन पुरी गली नं–2	हरियाणा	14-6-2014	Jun-15	150
HRY 150	श्री विदूसी भारद्वाज	म.नं–104 सेक्टर–10ए	हरियाणा	14-6-2014	Jun-15	150
HRY 151	श्री चन्दभान आर्य	म.न–869 सैक्टर–10ए	हरियाणा	14-6-2014	Jun-15	150
HRY 154	श्रीमती प्रमोद डाटा जी	म.नं–150 द्वितीय फलोर मेकफिल्ड गार्डन सैक्टर–51	हरियाणा	14-6-2014	Jun-15	150
HRY 155	श्री माया रस्तोगी	म.नं–452 सैक्टर –15/2	हरियाणा	14-6-2014	Jun-15	150
HRY 156	श्री भूपेन्द्र बैनीवाल जी	म.न–4909/31 राजेन्द्र पार्क जी ब्लाक नजदीक भारत गैस गोदाम	हरियाणा	14-6-2014	Jun-15	150
HRY 158	श्री दया गोयल जी	म.नं–654/5 पटेलनगर गली नं–3	हरियाणा	14-6-2014	Jun-15	150
HRY 159	मास्टर सोमनाथ आर्य	(प्रधान) म.नं–363–364 प्रतापनगर	हरियाणा	14-6-2014	Jun-15	150
HRY 161	श्री भारत भूषण आर्य	म.नं–1065 सैक्टर–15 पार्ट–2	हरियाणा	14-6-2014	Jun-15	150
HRY 163	श्री धर्मवीर जी	म.नं–957 सैक्टर 15–प्प	हरियाणा	15-6-2014	Jun-15	150
HRY 164	श्री ओम प्रकाश आर्य	म.नं–958 सैक्टर–10ए	हरियाणा	15-6-2014	Jun-15	150
HRY 166	श्री विनय कुमार पंडित जी	म न.–776 सेक्टर–7	हरियाणा	27-6-2014	Jun-15	150
HRY 167	श्रीमती वन्दना सतीजा	म.नं. 377/21बी, निकट रायन नेशनल स्कूल,	हरियाणा	27-6-2015	Jul-15	150
HRY 168	डॉ0 वी.के. गुप्ता	जे–5/5 (डी.एल.एफ) सीटी फेज–2 गुड़गांव	हरियाणा	27-6-2015	Jun-15	150
HRY 171	श्री भोपाल सिंह आर्य	प्रीतमपुरा कालोनी पो.ओ फसगढ़ समीप हवाई पट्टी बुडडाखेड़ा केब पुरा करनाल हरियाणा		29-10-2014	Oct-15	150
HRY 173	श्री दिवाषु आर्य/ धर्म देव आर्य	222 इन्द्रा कालोनी विद्यासागर हाईस्कूल	हरियाणा	14-11-2014	Nov-15	150
HRY 175	श्री राजपाल आर्य	सेक्टर 6 करनाल		25.04.2011	May-12	600

हरियाणा के उन आजीवन सदस्यों (15 वर्षीय) की सूची जिनका शुल्क देय है

HRL1	श्री सुनील दाहिया	289/28 पश्चिम रामनगर	हरियाणा	28.10.2010	Oct-15	1500
HRL2	श्री बलराज कपुर	एल–29/5 डी0 एल0 एफ0 सिटी/2	हरियाणा	25.02.2003	Feb-09	1500
HRL3	श्री रामचन्द्र सागर	474 सैक्टर 9फ़रीदाबाद	हरियाणा	24.01.2001	Jan-06	1500
HRL4	श्री योगेन्द्र पाल सिंह	8–सी प्रेमनगर	हरियाणा	29.04.2000	Apr-05	1500
HRL5	श्री सोमनाथ लाबरू	1594 सैक्टर 15	हरियाणा	30.11.1993	Nov-95	1500
HRL6	श्री राजेश कुमार	सुपुत्र श्री चन्द्रप्रकाश अग्रवाल गुरुद्वारा गली घरौण्डा	हरियाणा	detail not received		1500
HRL7	श्री रोशनलाल देवीदयाल शर्मा	314 सावनपुरी निकट राधास्वामी सत्संग–घर	हरियाणा	10.07.1989	Jul-90	1500
HRL9	देव सरन शर्मा	गली पंडित मान सिंह, जाटीराना	हरियाणा	03.06.2008	Jun-13	1500
HRL12	कमला मलोहत्रा	476–सैक्टर 15 फरीदाबाद	हरियाणा	13.02.2005	Feb-10	1500
HRL13	श्री सवाई राम एडवोकेट	407/11 आर्द"	हरियाणा	12.10.2002	Oct-07	1500
HRL14	श्री यशवीर	ग्राम व डाक0 बोहर	हरियाणा	20.12.2004	Dec-09	1500
HRL15	श्री इन्द्रजीत देव	चूना भट्ठियॉं, सिटि सैन्टर के निकट,	हरियाणा	08.09.2011	Sep-16	1500
HRL16	डॉ0 दर्शनलाल गोगिया	द्वारा सुमित मार्बल यमुनानगर मार्ग	हरियाणा	25.08.2005	Aug-15	1500
HRL17	श्री हरि राम अम्बिका	टिम्बर्स सहारनपुर मार्ग	हरियाणा	21.01.1991	Jan-06	1500
HRL18	मेजर अमोलक राम (अवकाश प्राप्त)	द्वारा डॉ0एन0 के0 महानी एच0 आई0 जी0 2147 सैक्टर 6	हरियाणा	detail not received		1500
HRL19	इंजीनियर यू0एस0 चोपड़ा	म0नं0 85 सैक्टर–17 फ़रीदाबाद	हरियाणा	06.11.1990	Nov-92	1500
HRL20	श्री राम सिंह	सुपत्र श्री मान सिंह ग्राम खड़काली डाक मधुवन	हरियाणा			1500
HRL21	श्री धर्मवीर मलिक	ए0 एफ0 सी0 स्कूल सॉपला मण्डी	हरियाणा	04.12.1991	Dec-93	1500
HRL24	आदर्श कुमारी मिड्डा	म.न 120–एल माडल टाउन	हरियाणा	detail not received		1500
HRL25	श्री हरगोविन्दलाल	म.न–108 सैक्टर–22ए	हरियाणा	detail not received		1500
HRL26	श्री श्याम आर्य	टैक्सटाईल 665/4 पंचरंगा बाजार	हरियाणा	detail not received		1500
HRL27	मंत्री आर्य समाज	मॉडल टाउन	हरियाणा	detail not received		1500
HRL28	जय सिंह सैनी	मनु क्लीनिक बाई पास रोड़ चान्दपुर	हरियाणा	detail not received		1500
HRL29	श्री हरबंस लाल	5 कुंजपुरा हाउस सुभाश मार्ग	हरियाणा	detail not received		1500
HRL30	श्रीमती सविता बजाज	म0नं0 11 ग्राम टुण्डलासैक्टर–बी डिफैन्स कालोनी	हरियाणा	detail not received		1500
HRL31	श्रीमती प्रेमलता गुप्ता	1091 सैक्टर–15	हरियाणा	detail not received		1500
HRL34	सत्यवती	पत्नी श्री विजय सिंह नान्दल, ग्राम व पो0 बोहर	हरियाणा	detail not received		1500
HRL35	श्री दर्शन दयाल	565 सैक्टर 16–ए	हरियाणा	detail not received		1500
HRL36	श्री योगध्यान	द्वारा सर्वश्री योगध्यान सुरेश कुमार कमिशन एजैण्ट कैथल मण्डी	हरियाणा	detail not received		1500
HRL37	श्री सुरेश मल्होत्रा	1811 सैक्टर–9	हरियाणा	detail not received		1500
				detail not received		1500
HRL42	श्री लाजपत राय मेहतानी	139/2 कृष्ण कालोनी	हरियाणा	detail not received		1500
HRL43	श्री सुधीर कपूर	3 जी–64 एन आई. टी.	हरियाणा	detail not received		1500
HRL44	श्री मनु शर्मा द्वारा	श्री राजीव शर्मा म0 नं01946 सैक्टर 9 फरीदाबाद	हरियाणा	2/4/2010	Mar-25	1500
HRL45	डॉ0 ओम प्रकाश ललित	8 /8 गीता कालोनी, कुरूक्षेत्र	हरियाणा	detail not received		1500
HRL46	इन्दर जीत आर्य	दुकान नं. 39 नई अनाज मण्डी कालॉवाली,	हरियाणा	detail not received		1500
HRL47	श्री सुरेन्द्र कुमार	211 अशोक मार्ग	हरियाणा	detail not received		1500
HRL49	श्री अतुल अग्रवाल	द्वारा श्री बंशीधर राम गोपाल मेंहदी गोदाम दिल्ली गेट	हरियाणा	detail not received		1500
HRL50	श्री ज्ञानप्रकाश कुकरेजा	786 सैक्टर–8 अर्बन एस्टेट	हरियाणा	detail not received		1500
HRL53	मदनलाल शर्मा	म0नं0 139 आनन्द गार्डन निकट रेलवे स्टेशन,	हरियाणा	detail not received		1500
HRL55	धमेन्द्र कुमार भोगल	म.नं. 414, सैक्टर–19,	हरियाणा	detail not received		1500
HRL56	चौ0 कुलदीप सिंह देसवाल	271/1 रोहतक रोड स्टैडियम के सामने	हरियाणा	detail not received		1500
HRL57	श्री सोम प्रकाश आर्य	1267 नहर मार्ग	हरियाणा	detail not received		1500

HRL59	हरिचन्द्र स्नेही	न0 – 2190 सैकटर –12 , पार्ट–1	हरियाणा	detail not received		1500
HRL60	श्री महेन्द्र पाल अरोड़ा	एच–575पालम विहार	हरियाणा	detail not received		1500
HRL63	श्री सुभाष पाहुजा	उषा एन्टर प्राइजिज, मनोहर कालोनी,	हरियाणा	detail not received		1500
HRL65	ओम् प्रकाश शर्मा	म.नं. 1868 सैक्टर–45	हरियाणा	detail not received		1500
HRL66	श्री रमेश मदान	म0 नं0 737 सैक्टर–8अर्बन एस्टेट	हरियाणा	detail not received		1500
HRL67	डॉ0 सुखदेव चौधरी	231/6 साधुमण्डी	हरियाणा	detail not received		1500
HRL68	श्री जितेन्द्र जून	सुपुत्र श्री धर्म सिंह ग्राम एवं डाकघर छतैहरा बहादुरपुर जिला	हरियाणा	detail not received		1500
HRL69	श्री प्रमोद कुमार आर्य	30–सी गोविन्दपुरी मार्ग	यमुनानगर	detail not received		1500
HRL71	भगवन मोटर्स	एण्ड श्याम स्टील फोरजिंग, दुर्गा गार्डन छोटी लाईन,	हरियाणा	01.10.2000	Oct-15	1500
HRL72	श्रीमती शशी वर्मा	म0 नं0 1455 सैक्टर–14	हरियाणा	03.02.2001	Feb-06	1500
HRL73	श्रीमती भीला गुप्ता	439–एल 0 माडल टाउन	हरियाणा	03.02.2001	Feb-15	1500
HRL74	श्रीमती प्रेमसुधा गोयल	126–एल 0 माडल टाउन	हरियाणा	22.05.2001	May-15	1500
HRL76	सुनील मल्होत्रा	म.नं. 1001, अर्जुन नगर, गली नं. 2,	हरियाणा	detail not received		1500
HRL77	श्रीमती मीना सेहरा	म0नं0 478 सैक्टर–22 ए	हरियाणा	06.10.2004	Oct-08	1500
HRL83	श्री सुदर्शन कालरा,	425 सैक्टर– 7, पंचकुला,	हरियाणा	detail not received		1500
HRL101	श्री विक्रम सिंह भल्ला जी	सी–9/11 डी.एल.एफ. फेज–1,	हरियाणा	detail not received		1500
HRL112	डा0 दिवाकर मल्होत्रा जी एम.डी	रेडियोलाजिस्ट म.नं–408 सैक्टर 37		detail not received		1500

महत्वपूर्ण सूचना

पवमान पत्रिका के सुविज्ञ पाठकों को सूचित किया जाता है कि सभी वार्षिक और आजीवन (15 वर्षीय) सदस्य अपना अवशेष शुल्क अविलम्ब जमा करा दें और यदि आप पत्रिका में प्रकाशित सूचना से सहमत नहीं हैं तो अपनी रसीद की फोटोप्रति तपोवन आश्रम के कार्यालय के पते पर 31 दिसम्बर 2015 तक अवश्य भेज दें। 15 वर्षीय सदस्य वार्षिक शुल्क रु० 150/ देकर वार्षिक सदस्य भी बन सकते हैं। जनवरी 2016 की पवमान पत्रिका केवल उन्हीं सदस्यों को भेजी जायेगी जिनका शुल्क कार्यालय में जमा होगा

सूचना

पवमान पत्रिका के सुविज्ञ पाठको को सूचित किया जाता है कि सितम्बर 2014 से पत्रिका का वार्षिक मूल्य 150 रुपये हो गया है। जिन ग्राहकों ने पत्रिका शुल्क जमा नहीं किया है वह पिछले वर्षो सहित इस वर्ष का शुल्क शीघ्र जमा कर दें। यह अन्तिम अनुरोध है जनवरी माह की पवमान पत्रिका केवल उन्हीं ग्राहकों को भेजी जाएगी जिनके द्वारा पत्रिका का शुल्क जमा कर दिया गया हो। आप कैनरा बैंक, क्लाक टावर, देहरादून (IFSC code : CNRB0002162) खाता 'पवमान' खाता सं. 2162101021169 में शुल्क जमा करा सकते हैं। आश्रम के दूरभाष नं. 0135–2787001 पर सूचना प्राप्त होने पर आपके द्वारा जमा शुल्क की रसीद आपके पते पर भेज दी जायेगी। पत्रिका प्राप्त न होने पर इसकी सूचना आश्रम के ईमेल : vaidicsadanashram88@gmail.com अथवा श्री रमाकान्त कौशिक, मोबाईल नं. 8171619653 पर एसएमएस भेजने पर पत्रिका आपको पुनः भेज दी जाएगी। सूचनीय है कि पवमान पत्रिका के प्रकाशन पर प्रति माह लगभग 10 हजार रुपए की हानि हो रही है। आप समय पर पत्रिका का शुल्क जमा करके तथा विज्ञापन देकर इस हानि को कम कर सकते हैं। विज्ञापन के रेट प्रथम पृष्ठ पर दिये गये हैं।

Saturn Series

CPU Holder

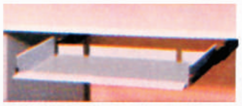

Slide out Keyboard tray

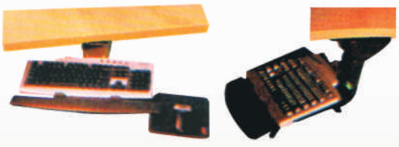

Swivel and Tiltable keyboard tray

Wire Management

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary: Any infringement is liable for prosecution.

ISO:9001 DNV CERTIFIED

DE BONO FLEXCOM (INDIA) LTD.: Kukreja House, 1st Floor, 46, Rani Jhanshi Road, New Delhi-110055
Ph : 011-23540721. 23533936 **Fax :** 23533944 **Email :** debono@debonoindia.com

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2015-17 **समाचार पत्र पंजीयन** 51900/88

MUNJAL SHOWA मुंजाल शोवा

मुंजाल शोवा लिमिटेड देश में टू व्हीलर / फोर व्हीलर उद्योग में सभी प्रमुख ओ.ई.एम. के लिए शॉक एब्जोर्बर, फ्रंट फोर्क्स, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कंवेंशनल) और गैस स्प्रिंगो का सबसे बड़ा निर्माता है। निर्मित उत्पाद, गुणवत्ता और सुरक्षा के कड़े मानों के अनुरूप होते हैं। कम्पनी के उत्पाद बाधामुक्त, आरामदेह, चिरस्थायी, विश्वसनीय और सुरक्षित यात्रा के लिए जाने जाते हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, टीएस–16949, आईएसओ 14001, ओ.एच.एस.ए.एस. 18001 और टीपीएम प्रमाणित कम्पनी है। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

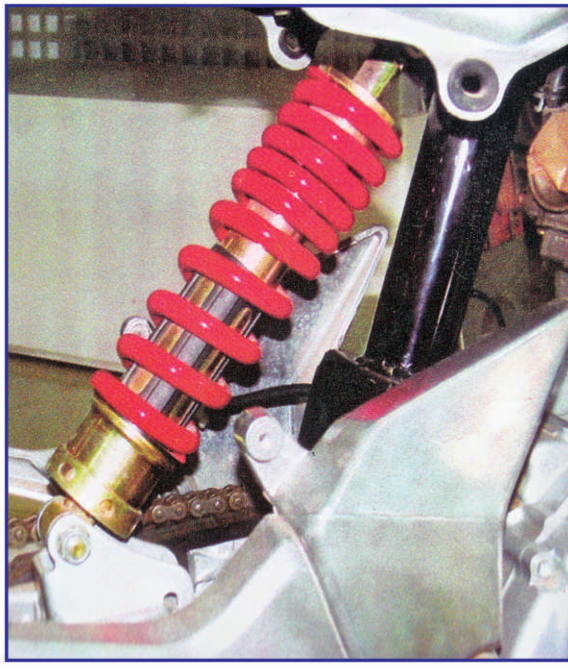

टीपीएम प्रमाणित कम्पनी

आईएसओ / टीएस–16949–2002 प्रमाणित

आईएसओ–14001 एवं ओएचएसएएस–18001 प्रमाणित

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

- हीरो मोटोकोर्प लिमिटेड
- मारुती सुजुकी इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा कार्स इन्डिया लिमिटेड
- होन्डा मोटर साइकल एवं स्कूटर इन्डिया (प्र0) लिमिटेड
- इन्डिया यामहा मोटर (प्र0) लिमिटेड

हमारा उत्पादन

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्कस
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

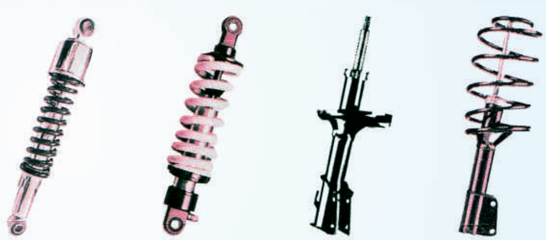

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं0 9–11, मारुति इन्डस्ट्रीअल एरिया, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–2341001, 4783000, 4783100
प्लॉट नं0 26 इ एवं एफ, सेक्टर–3, मानेसर, गुड़गाँव। दूरभाषः 0124–4783000, 4783100
प्लॉट नं0 1, इन्डस्ट्रीअल पार्क–2, सालेमपुर गाँव, मेहदूद–हरिद्वार, उत्तराखण्ड दूरभाषः 0124–4783000, 4783100

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित। संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com